दिसम्बर-२०१७ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०७ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

दिसम्बर-२०१७

अन्न उगाता
वह श्रम करता,
सबकी भूख मिटाता।
ऋषि कहते किसान राजा है,
श्रम-स्वेद-स्वर्ण बनाता।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० (७२)

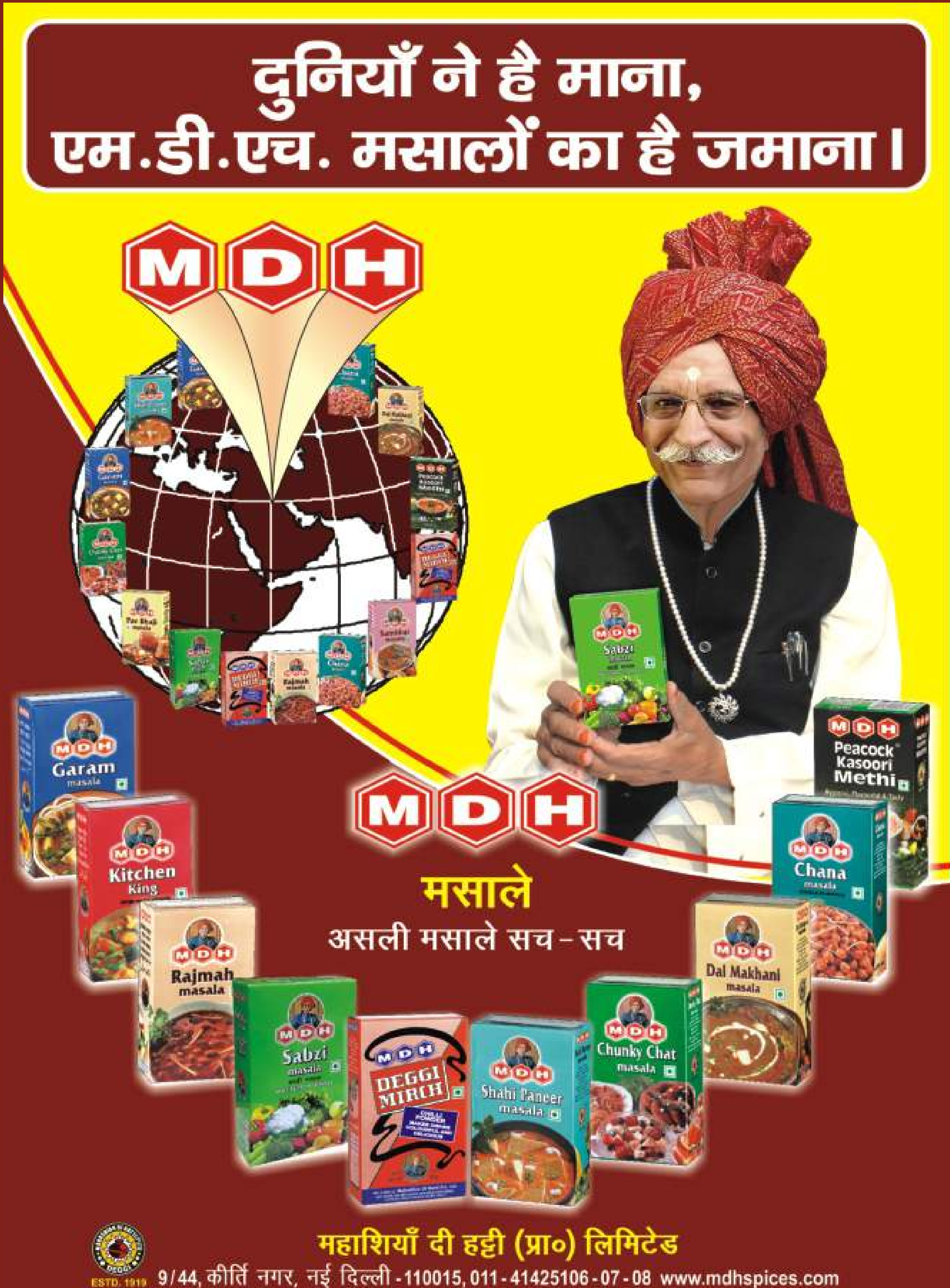
दुनियाँ ने है माना,
एम.डी.एच. मसालों का है जमाना।
MDH
Garam masala
Kitchen King
Rajmah masala
Sabzi masala
DEGGI MIRCH
Shahi Paneer masala
Chunky Chat masala
Dal Makhani masala
Chana masala
Peacock Kasoori Methi
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११८
मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी
विक्रम संवत्
२०७४
दयानन्दाब्द
१९३

December - 2017

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २०१७ १६

०४	वेद सुधा
०६	गुरु का चयन
१३	रानी पद्मावती
१८	अन्य ग्रहों पर एलियन रहते हैं
२०	आर्य समाज और ढोंगी बाबा
२२	सत्यार्थप्रकाश पहेली- १२/१७
२५	स्वामी श्रद्धानन्द और गाँधीजी
२८	स्वास्थ्य- मधुमेह की शुरूआत में
२९	कथा सरित- दो आने का साबुन
३०	सत्यार्थ पीयूष- ईश्वरीय ज्ञान

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ | अंक - ०७

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

महर्षि दयानन्द - वेदभाष्य की प्रमाणिकता की पुष्टि एवं मेरी वेदभाष्य शैली

यजुर्वेद २५/७ का त्रिविध भाष्य एवं भ्रान्ति निवारण

पूषणं वनिष्ठुनान्धाहीन्त्स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभिर्विह्रुत आन्त्रैरपो वस्तिना वृषणमाण्डाभ्यां
वाजिनꣳ शेपेन प्रजाꣳ रेतसा चाषान् पित्तेन प्रदरान् पायुना कूश्माञ्छकपिण्डैः। - यजुर्वेद २५/७

पूषणमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। पूषादयो देवताः। निचृदष्टिश्छनदः। मध्यमः स्वरः।।

अभी आर्य जगत् के बहुश्रुत युवा विद्वान् आचार्य सनत्कुमार जी मेरे पास मिलने आये। उन्होंने मुझे अवगत कराया कि यजुर्वेद अध्याय २५ मंत्र ७ के ऋषि दयानन्द भाष्य पर कुछ स्वाध्यायशील परन्तु छिद्रान्वेषी मुस्लिम युवकों ने तीक्ष्ण व्यंग्य किये हैं। उन्होंने मुझे इस मंत्र का अर्थ स्पष्ट करने का आग्रह किया। मैंने उस मंत्र के भाष्य एवं हिन्दी भाषा में किये पदार्थ को देखा। यह भाष्य सहसा ही किसी भी विद्वान् को उलझन में डालने वाला है। इस विषय में मेरा मत है कि महर्षि दयानन्द के भाष्य का हिन्दी भाग उनके लेखक पण्डितों का बनाया हुआ है। इस मंत्र का हिन्दी भाग देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह संस्कृत भाग के अनुसार ही है परन्तु मैं इससे सहमत नहीं हूँ। वस्तुतः समयाभाव के कारण ऋषि अपने मन के अनुकूल भाष्य नहीं कर सके किन्तु हिन्दी अनुवादकों से अपेक्षा थी कि वे उनके भावों को यथार्थ रूप में समझकर पदार्थ लिखते। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। वेदार्थ एवं इस विषय में ऋषि की दृष्टि से अनभिज्ञ संस्कृत विद्वान् हिन्दी पदार्थ देखकर ऋषि भाष्य पर आक्षेप करते हैं। इस विषय में आर्य समाज की सभाओं का दायित्व है कि समर्थ विद्वानों से इस समस्या का समाधान करवाने का प्रयास करें। जिस मंत्र की ओर संकेत किया गया है, वह इस प्रकार है-

पूषणमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। पूषादयो देवताः। निचृदष्टिश्छनदः। मध्यमः स्वरः।। पुनस्तमेव विषयमाह।।

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है।।

पूषणं वनिष्ठुनान्धाहीन्त्स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभिर्विह्रुत आन्त्रैरपो वस्तिना वृषणमाण्डाभ्यां
वाजिनꣳ शेपेन प्रजाꣳ रेतसा चाषान् पित्तेन प्रदरान् पायुना कूश्माञ्छकपिण्डैः।।७।।

इसका ऋषिकृत भाष्य इस प्रकार है-

पूषणम्। वनिष्ठुना। अन्धाहीनित्यन्धऽअहीन्। स्थूलगुदयेति स्थूलगुदया। सर्पान्। गुदाभिः। विह्रुत इति विऽह्रुतः। आन्त्रैः। अपः। वस्तिना। वृषणम्। आण्डाभ्याम्। वाजिनम्। शेपेन। प्रजामिति प्रऽजाम्। रेतसा। चाषान्। पित्तेन। प्रदरानिति प्रऽदरान्। पायुना। कूश्मान्। शकपिण्डैरिति शकऽपिण्डैः।।७।।

पदार्थः- (पूषणम्) पुष्टिकरम् (वनिष्ठुना) याचनेन (अन्धाहीन्) अन्धान् सर्पान् (स्थूलगुदया) स्थूलया गुदया सह (सर्पान्) (गुदाभिः) (विह्रुतः) विशेषेण कुटिलान् (आन्त्रैः) उदरस्थैर्नाडीविशेषैः (अपः) जलानि (त्रस्तिना) नाभेरधोभागेन (वृषणम्) वीर्याधारम् (आण्डाभ्याम्) अण्डाकाराभ्यां वृषणावयवाभ्याम् (वाजिनम्) अश्वम् (शेपेन) लिङ्गेन (प्रजाम्) सन्ततिम् (रेतसा) वीर्येण (चाषान्) भक्षणानि (पित्तेन) (प्रदरान्) उदरावयवान् (पायुना) एतदिन्द्रियेण (कूश्मान्) शासनानि। अत्र कशघातोर्मक्प्रत्ययोऽन्येषामपीति दीर्घश्च (शकपिण्डैः) शक्तेः संघातैः।।७।।

अन्वयः- हे मनुष्या यूयं वनिष्ठुना पूषणं स्थूलगुदया सह वर्त्तमानानन्धाहीन् गुदाभिः सहितान् विह्रुतः सर्पानान्त्रैरपो वस्तिना वृषणमाण्डाभ्यां वाजिनं शेपेन रेतसा प्रजां पित्तेन चाषाण् प्रदरान् पायुना शकपिण्डैः कूश्मान् निगृह्णीत।।७।।

भावार्थः- येन येन यद्यत्कार्यं सिध्येत्तेन तेनाङ्गेन पदार्थेन वा तत्तत्साधनीयम्

उपलब्ध हिन्दी अनुवाद-

पदार्थः- हे मनुष्यो! तुम (वनिष्ठुना) माँगने से (पूषणम्) पुष्टि करने वाले को (स्थूलगुदया) स्थूल गुदेन्द्रिय के साथ वर्त्तमान (अन्धाहीन्) अन्धे साँपो को (गुदाभिः) गुदेन्द्रियों के साथ वर्त्तमान (विह्रुतः) विशेष कुटिल (सर्पान्) सर्पों को (आन्त्रैः) आंतों से (अपः) जलों को (वस्तिना) नाभि के नीचे के भाग से (वृषणम्) अण्डकोष को (आण्डाभ्याम्) आंडों से (वजिनम्) घोड़ा को (शेपेन) लिङ्ग और (रेतसा) वीर्य से (प्रजाम्) सन्तान को (पित्तेन) पित्त से (चाषान्) भोजनों को (प्रदरान्) पेट के अंगों को (पायुना) गुदेन्द्रिय से और (शकपिण्डैः) शक्तियों से (कूश्मान्) शिखावटों को निरन्तर लेओ।।७।।

भावार्थः- जिस जिस से जो जो काम सिद्ध हो उस उस अंग वा पदार्थ से वह वह काम सिद्ध करना चाहिये।।७।।

निश्चित ही यह हिन्दी पदार्थ उपयुक्त व स्पष्ट नहीं है। मैं ऋषि के भाष्य का हिन्दी में व्याख्यान करता हूँ-

हे मनुष्यो! (वनिष्ठुना) याचन अर्थात् ग्रहण करने की इच्छा तथा नष्ट करने की प्रवृत्ति, {याचृ वधकर्मा - निघं. २.१९} इन दोनों ही प्रकार के कर्मों से (पूषणम्) पुष्टि करण की क्रिया सम्यक् प्रकार से होती है। ध्यातव्य है कि शरीर एवं ब्रह्माण्ड दोनों में संयोग व वियोग किंवा सृजन वा विनाश दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ साथ-साथ चलती हैं। इनमें से एक के अभाव में ही सृष्टि प्रक्रिया समाप्त हो जायेगी। यहाँ महर्षि के 'याचनेन' पद के दोनों अर्थ ग्रहण करने चाहिए। यहाँ कोई 'याचनेन' पद से दोनों अर्थों का ग्रहण न करे, उसे 'वनिष्ठुना' पद 'वनु याचने' तथा 'वनु संभक्तौ' इन दोनों धातुओं से व्युत्पन्न मानना चाहिए। तब भी ये दोनों अर्थ यहाँ निकलते हैं।

(स्थूलगुदया) स्थूल गुदा किंवा पुच्छभाग के द्वारा (अन्धाहीन्) अन्धे सर्प अपने क्रियाओं को करने में समर्थ होते हैं। हम अन्तर्जाल से जान सकते हैं कि जो सांप अंधे होते हैं, उनकी पूंछ मुख के समान मोटी होती है। वहीं गुदा भी होती है। उसी स्थूल गुदा से ही वह सांप अण्डा देता है। इसी कारण गुदा स्थूल होती है। Brahminy Blind Snake केवल मादा ही होती है। इनमें नर नहीं देखा गया है। इस

कारण यह स्वयं ही बिना किसी नर के संयोग के गुदा से अण्डे देती है। इसी कारण कहा है कि स्थूल गुदा द्वारा अन्धे सर्प अपने कर्मों को करने में समर्थ होते हैं।

(गुदाभिः) गुदा वा पुच्छभाग के द्वारा (विह्रुतः) विशेष रूप से टेढ़े मेढ़े गति करने वाले सर्प अपनी गत्यादि क्रियाओं को सम्यग्रूपेण करने में समर्थ होते हैं। यहाँ 'विह्रुतः' शब्द से शाकल सांप का ग्रहण किया जा सकता है। यह सर्प अपनी पूंछ वा गुदा भाग को मुख में दबाकर गोल घेरे के समान आकृत्ति धारण करके पहिये के समान गति करता है। इस सर्प को अंग्रेजी भाषा में Hoop Snake कहते हैं। इस प्रकार के सर्प के विषय में वैज्ञानिकों को शंका है। ऐतरेय ब्राह्मण में भी एक स्थान पर इस प्रकार के सर्प की चर्चा है। आचार्य सायण ने भी अपने ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य में इस सर्प की चर्चा की है। सम्भव है कि यह प्रजाति अब विलुप्त हो गयी हो। कई सर्प पूंछ को हिलाकर अपने शिकार को आकर्षित करके उन्हें पकड़ लेते हैं। यहाँ भी गुदा वा पूंछ की भूमिका है। यहाँ गति के स्थान पर शिकार करने में भूमिका है। इस कारण गुदा के द्वारा इनके क्रियाशील रहने वा सम्यक् क्रिया करने की चर्चा की गयी है।

(सर्पान्) अन्य प्रकार के सांप (आन्त्रैः) उदरस्थ नाड़ी {अमति जानाति प्राप्नोति येन तत् अन्त्रम् (उ.को. ४.१६५)} अर्थात् सर्प शरीर के ऊपर उभरे शल्कों के द्वारा ही गति करते है किंवा उसके शरीर में पाई जाने वाली हजारों मांसपेशियों रूपी नाड़ियों के द्वारा ही वह अपने सभी कर्मों को करने में समर्थ होता है।

(अपः) किसी भी प्राणी के शरीर का एक महत्वपूर्ण एवं सबसे बड़ा घटक जल (वस्तिना) नाभि के निचले भाग में स्थित अंगों विशेषकर मूत्र उत्सर्जन तन्त्र के द्वारा ही शरीर में सम्यक् क्रियाएँ कर पाता है। आयुर्विज्ञानी इस पर विशेष विचार कर सकते हैं कि बहुमूत्र वा मूत्रकृच्छ्र रोग में शरीर में विद्यमान जल अपने कर्मों को सम्यक् रूप से कर पाने में कैसे असमर्थ होता है?

(वृषणम्) नर प्राणी के अण्डकोष (आण्डाभ्याम्) अपने अवयव रूप अण्डों के सम्यक् क्रियाशील व बलवान् रहने पर ही शुक्र निर्माणादि कर्मों को सम्यक् प्रकार से करने में समर्थ हो सकते हैं। उनमें दोष उपस्थित होने पर सम्पूर्ण अण्डकोष का कार्य सर्वथा बन्द हो जाता है।

(वाजिनम्) घोड़े, बैल आदि बलवान् पशु (शेपेन) अपने लिङ्ग के द्वारा विशेष बल व गति से युक्त होते हैं। जिन घोड़ों को नपुंसक बना दिया जाता है, उनके बल व गति दोनों ही हीन हो जाते हैं। उनकी क्रियाशीलता में न्यूनता आ जाती है। यही अंग उनके बल-पौरुष का मुख्य आधार वा साधन है। इसी कारण इस अंग की चर्चा की गयी है।

(प्रजाम्) विभिन्न प्राणियों की सन्तान (रेतसा) अपने पिता व माता के रेतः अर्थात् शुक्र व रज के समर्थ होने पर ही सामर्थ्यवती होती है। शुक्र व रज के संयोग के बिना प्रजा का उत्पन्न होना ही असम्भव है और उनके निर्बल होने पर सन्तान भी निर्बल ही होगी।

(चाषान्) विभिन्न खाद्य पदार्थ (पित्तेन) आहार नाल में मिलने वाले पित्त आदि विभिन्न पाचक रसों के द्वारा ही अपना प्रभाव सम्यक् रूप से दर्शा सकते हैं। इसका तात्पर्य है कि इन पाचक रसों के अभाव में खाद्य पदार्थ न केवल शरीर को पोषण नहीं दे सकते हैं अपितु उस प्राणी को रोगी भी बना देते हैं।

(प्रदरान्) शरीर के अन्दर विशेषकर उदर में विद्यमान विभिन्न अवयव (पायुना) गुदा-इन्द्रिय के सम्यक् कार्यशील रहने पर ही अपने अपने कार्य सम्यग्रूपेण करने में सक्षम होते हैं। जब मनुष्य व अन्य किसी भी प्राणी को कोष्ठबद्धता, अतिसार किंवा अर्श-भगन्दर जैसा

कोई रोग हो जाये, तब उस मनुष्य के पाचनतंत्र के अन्य अवयव यथा आमाशय, ग्रहणी, दोनों प्रकार की आंतें, यकृत्, प्लीहा व अग्नाशयादि अंग भी प्रभावित होते हैं अर्थात् वे भी सम्यग्रूपेण अपने-अपने कार्य नहीं कर पाते हैं।

(**कूश्मान्**) मस्तिष्क एवं इससे संचालित सभी अंग-प्रत्यंगों की नियन्त्रण व संचालन क्षमता (**शकपिण्डैः**) मस्तिष्क एवं उससे संचालित अंग-प्रत्यंगों की शक्ति के सम्यक् संतुलन के द्वारा ही सम्यग्रूपेण कार्य कर पाती है।

इस मंत्र में इसी अध्याय के प्रथम मंत्र से 'स्वाहा' पद की अनुवृत्ति समझनी चाहिए। इसी से हमने सम्यक् क्रिया करने का भाव ग्रहण किया है।

भावार्थ- हे मनुष्यो! सृष्टि में संयोग-वियोग के गुण के द्वारा विभिन्न क्रियाओं व पदार्थों की रक्षा व पालन, अंधे सांपों का पुच्छ वा गुदा भाग से अंडे देना वा इसके सहयोग से शाकल सांप चलने का, सभी सांपों का मांसपेशियों के द्वारा होने वाले कर्मों, शरीर में मूत्र विसर्जन की सम्यक् क्रिया के द्वारा शरीर में जल का सम्यक् कार्यशील रहना, अण्डकोषों में अवयवभूत अण्डों के स्वस्थ होने पर ही अण्डकोषों का समर्थ होना, पौरुष शक्ति सम्पन्न घोड़े आदि बलवान् प्राणी का बलवान् रह पाना, शुक्र व रज की शुद्धता व स्वास्थ्य से ही स्वस्थ प्रजा का उत्पन्न होना, पित्त आदि पाचक रसों के द्वारा भोजन का पचना, मलादि विसर्जन की सम्यक् क्रिया के द्वारा शरीरांगों का स्वस्थ रह पाना एवं मस्तिष्कगत स्नायुओं के स्वस्थ व सबल रहने पर ही शरीर में अन्य अंगों का सम्यक् नियन्त्रण व संचालन आदि कर्म होते हैं, ऐसा तुम लोग जानो।

इस मंत्र पर मेरा द्विविध भाष्य

{प्रजापतिः- प्राणो हि प्रजापतिः (शत.४.५.५.१३), प्रजापतिर्ह्यात्मा (शत. ६.२.२.१२)। सर्वाणि छन्दांसि प्रजापतिः (शत. ६.२.१.१०)। पूषा= पुष्टिर्वै पूषा (तै.ब्रा.२.७.२.१), असौ वै पूषा योऽसौ (सूर्यः) तपति (कौ.५.२), अन्नं वै पूषा (कौ.१२.८), पशवो वै पूषा (शत. १३.१.८.६) इयं पृथिवी वै पूषा (मै.२.५.५)}

इस ऋचा का ऋषि प्रजापति है। इसका तात्पर्य है कि इस छन्द रश्मि की उत्पत्ति सभी प्रकार की अन्य छन्द रश्मियों में कार्यरत प्राण व सूत्रात्मा वायु के मेल से होती है। इसका देवता पूषा होने से इसके दैवत प्रभाव से विभिन्न प्रकाशित व अप्रकाशित कणों एवं विभिन्न छन्द रश्मियों के पारस्परिक संयोग की प्रक्रिया पृथिवी एवं सूर्य्यादि लोकों के अन्दर समृद्ध होती है।

इसका छन्द निचृद्दृष्टि होने से इसके छान्दस प्रभाव से सभी क्रियाएँ तीक्ष्ण एवं व्यापक होती हैं।

इसका स्वर मध्यम होने से यह छन्द रश्मि विभिन्न लोकों के मध्य वर्तमान होकर विभिन्न छन्द रश्मियों व कणों के मध्य क्रियाशील रहती है।

आधिदैविक भाष्य

(**पूषणम्**) सृष्टि की प्रत्येक पालन, रक्षण आदि क्रियाएँ (**वनिष्ठुना**) संयोग-वियोग किंवा आकर्षण, प्रतिकर्षण, विस्फोटक एवं विभाजक आदि बलों के द्वारा समृद्ध होती हैं। {वन संभक्तौ, वनु याचने, याचृ वधकर्मा (निघं.२.१९)} (**अन्धाहीन्**) {अन्ननाम (निघं.२.७), अन्नं वा अन्धः (जै.१.३.३), अन्धो रात्रिः (तां.६.१.७), अहर्व्वा अन्धः (तां.१२.३.३; जै.१.११६)। अहिः = द्यावापृथिव्योर्नाम (निघं.३.३०)} विभिन्न संयोज्य प्रकाशित व अप्रकाशित कण (**स्थूलगुदया**) {गुदा= प्राणो वै गुदः (श.३.८.४.३) यहाँ 'गुदः' पद को 'गुदा' रूप में लिखना छान्दस प्रयोग है।} व्यापक रूप से फैले हुए विभिन्न प्राणों के द्वारा अपनी विभिन्न क्रियाओं को सम्यक् रूप से कर पाते हैं। (**सर्पान्**) {इमे वै लोकाः सर्पास्ते हानेन सर्वेण सर्पन्ति यदिदं किं च (शत.७.४.१.२५) (छन्दांसि वै सर्वे लोकाः - जै.१.३३२), देवा वै सर्पाः (तै.ब्रा.२.२.२.६)} सभी प्रकार की छन्द रश्मियां एवं दृश्य कण वा तरंगें (**गुदाभिः**) विभिन्न प्राण रश्मियों के द्वारा अपनी क्रियाओं को करने में समर्थ होती हैं।

(**विह्रुतः**) विशेष रूप से कुटिल चाल चलने वाले सभी प्रकार के लोक एवं कण (आन्त्रैः) विभिन्न प्रकार की छन्द व प्राण रश्मियों के द्वारा निर्मित मार्गों पर उन्हीं रश्मियों के द्वारा प्रेरित होकर सम्यग्रूपेण सुरक्षित गमन करते हैं।

(**अपः**) विभिन्न तन्मात्राएँ एवं प्राणादि रश्मियाँ (**वस्तिना**) {वस्त आच्छादयति सा वस्तिः (उ.को.४.१८१)} सूत्रात्मा एवं बृहती छन्द आदि रश्मियों के द्वारा सम्यक् स्वरूप को प्राप्त करके अपनी नाना क्रियाओं को सम्यग्रूपेण सम्पन्न करती हैं।

(**वृषणम्**) विभिन्न वृषा अर्थात् पुरुष रूप में कार्य करने वाली रश्मियाँ किंवा कण अपने अन्दर व्याप्त (**अण्डाभ्याम्**) रेतः सेचन में समर्थ अर्थात् तेजोरूप प्राण व अपान किंवा प्राणादि रश्मियों के द्वारा ही अपने संयोगादि कर्मों को करने में समर्थ होती हैं।

(**वाजिनम्**) {छन्दांसि वै वाजिनः (गो.उ.१.२०), इन्द्रो वै वाजी (ऐ.३.१८)} वेगवान् एवं बलवान् विद्युत् एवं विभिन्न कण वा छन्द रश्मियाँ (**शेपेन**) {ग्रावा शेपः (तै.सं.७.५.२५.२) (ग्रावा= प्राणा वै ग्रावाणः- शत.१४.२.२.३३; बार्हता वै ग्रावाणः- शत.१२.८.२.१४, जागता वै ग्रावाणः (कौ.२९.१)। शेपः= शपते स्पृशतिकर्मणः (निरु.३.२१)} स्वयं को स्पर्श करने वाली प्राण एवं बृहती आदि छन्द रश्मियों के द्वारा अपने कार्यों को करने में समर्थ होती हैं। इसके साथ ही शुनः शेप नामक रश्मियों के द्वारा सूर्य्यलोक का केन्द्रीय भाग समृद्ध होता है।

(**प्रजाम्**) विभिन्न उत्पन्न रश्मि वा कण आदि पदार्थ (**रेतसा**) उनको उत्पन्न करने वाली विभिन्न रश्मियों के द्वारा क्रियाशील होते हैं।
(**चाषान्**) अवशोषित होने वाले कण वा रश्मि आदि पदार्थ (**पित्तेन**) {पित्तम्= तेजः (म.द.य.भा.१.७.६)} उसे तेज वा बल प्रदान करने वाली रश्मियों के द्वारा ही अपनी क्रियाओं को सम्पादित कर पाती हैं।
(**प्रदरान्**) {प्रदरान्= प्र+दृ विदारणे, उदरावयवान् (म.द.भा.)} अवकाशरूप आकाश में स्थित विभिन्न पदार्थ (**पायुना**) {पायुः= अन्तरिक्षं पायुः (तै.सं.७.५.२५.२)} आकाश तत्त्व के द्वारा आवृत्त रहकर उसके ही द्वारा नाना बलों को प्रदर्शित व अनुभव कर पाते हैं।
(**कूश्मान्**) इस सृष्टि के विभिन्न पदार्थों में नियन्त्रण की क्रियाएँ (**शकपिण्डैः**) {शक उदकनाम (निघं.१.१२)} अपने सिंचन रूपी कर्म के द्वारा उत्पन्न संघनित कणों (mediator particles) के द्वारा ही संचालित होती हैं। ध्यातव्य है कि यहाँ प्रथम मंत्र से 'स्वाहा' पद की अनुवृत्ति है।
भावार्थ- इस सृष्टि में विभिन्न प्रकार के पदार्थ अपने पृथक्-पृथक् कर्मों को पृथक्-पृथक् कणों वा रश्मि आदि पदार्थों के सहयोग से ही करने में समर्थ होते हैं। विद्वानों को इन सब क्रियाओं और पदार्थों को जानना चाहिए।
ऋचा का सृष्टि पर प्रभाव- इस छन्द रश्मि का सृष्टि पर व्यापक प्रभाव होता है। इसके प्रभाव से विभिन्न कणों व रश्मियों के मध्य कार्यरत विभिन्न प्रकार के बलों, गतियों, सुरक्षित मार्गों, नाना उत्पादन कर्मों, सतत् क्रियाशीलता आदि के लिए नाना प्रकार के कण, प्राण व छन्दादि रश्मियाँ एवं आकाश आदि तत्त्व सक्रिय होते हैं। यह रश्मि पूर्व से हो रहे नाना कर्मों को अच्छी प्रकार सम्पन्न करने में व्यापक सहयोग करती है।

आध्यात्मिक भाष्य

(**पूषणम्**) सबके पालन, पोषण व रक्षण के मुख्य हेतु परमात्मा को (**वनिष्ठुना**) पुरुषार्थपूर्वक प्रार्थना एवं अपने समस्त दुर्गुण-दुर्व्यसनों को नष्ट करके ही योग साधक प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है।
(**अन्धाहीन्**) {अहिः= समस्तविद्यासु व्यापनशीलः (ईश्वरः) (म.द.य.भा.५.२३)} अन्ध अर्थात् अन्न रूप किंवा जीवों के द्वारा सदैव नमन करने योग्य अहिरूप अर्थात् समस्त विद्याओं से समृद्ध परमेश्वर (**स्थूलगुदया**) शरीर व सृष्टि में व्याप्त प्राणापानोदान आदि के सम्यक् नियन्त्रण अर्थात् प्राणायामादि तप के द्वारा परिपक्व योगसाधना द्वारा प्राप्त करने में सुगम होता है।
(**सर्पान्**) ब्रह्माण्ड में व्याप्त विभिन्न गायत्र्यादि छन्द रश्मियों को (**गुदाभिः**) भी प्राणों पर नियन्त्रणपूर्वक योगाभ्यास के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।
(**विह्रुतः**) विभिन्न प्रकार के कुटिल मार्गों एवं अविद्यादि क्लेशों को (**आन्त्रैः**) वेदविद्या किंवा वेदविद्या के मूल उपदेष्टा परमपिता परमात्मा अथवा योगविद्या में निष्णात आचार्य के प्रति समर्पण व सम्मान के द्वारा विनष्ट किया जा सकता है।
(**अपः**) विभिन्न प्रकार के उत्तम गुण एवं कर्मों को (**वस्तिना**) नाभि के अधोभागस्थ उपस्थेन्द्रिय के पूर्ण संयम एवं तप व स्वाध्याय से प्राप्त सद्गुणों के आच्छादन के द्वारा सम्यग्रूपेण प्राप्त किया जा सकता है।
(**वृषणम्**) सब सुखों की वर्षा करने वाला परमेश्वर (**आण्डाभ्याम्**) {अण्डः= अमन्ति संप्रयोगं प्राप्नुवन्ति येन सः अण्डः (उ.को.१.११४)} सकल ब्रह्माण्ड एवं शरीररूपी पिण्ड के सम्यक् विज्ञान के द्वारा ही जाना जा सकता है।
(**वाजिनम्**) विभिन्न बल एवं गतियों का मूल कारण परमेश्वर (**शेपेन**) विविध सांसारिक विषयों को सतत् स्पर्श करने के स्वभाव से युक्त विभिन्न इन्द्रियाँ व मन के निग्रह के द्वारा प्राप्त होता है।
(**प्रजाम्**) {प्रजानाम्= सर्वेषां व्यवहाराणाम् (म.द.य.भा.३४.५)} योग साधनादि विभिन्न मोक्षसाधक व्यवहार (**रेतसा**) {रेतः= वागू रेतः (शत.१.७.२.२१), वागु हि रेतः (शत.१.५.२.७)} वाग् अर्थात् प्रणव के जप एवं ध्यान आदि के द्वारा सम्यग्रूपेण सिद्ध होते हैं।
(**चाषान्**) भक्षणीय अर्थात् विनष्ट करने योग्य काम, क्रोध, लोकादि आन्तरिक शत्रु किंवा सेवनीय ब्रह्मानन्द रस (**पित्तेन**) ब्रह्मवर्चस् रूपी तेज के द्वारा क्रमशः नष्ट किंवा प्राप्त होते है।
(**प्रदरान्**) {उदरŠ सदः (मै.३.८.८; क.४०.३)} परमेश्वर के आनन्द धाम (**पायुना**) विभिन्न दोषों से रक्षा करने वाले गायत्री जप-उपासनादि कर्मों के द्वारा प्राप्त होते हैं।
(**कूश्मान्**) मन-इन्द्रियादि पर नियन्त्रण (**शकपिण्डैः**) ईश्वरोपासनादि से प्राप्त सामर्थ्यों के द्वारा सम्यग्रूपेण स्थापित हो सकता है।
भावार्थ- प्रत्येक योगसाधक को चाहिए कि वह योग के विभिन्न अंगों की साधना करके अपने अविद्यादि क्लेशों एवं काम, क्रोधादि शत्रुओं को जीतकर अपनी योगसाधना को परिपुष्ट करे। ऐसा योगी ब्रह्माण्डस्थ वेद की ऋचाओं को सुगमता से ग्रहण करने के साथ-२ ब्रह्म साक्षात्कार करके निर्भ्रान्त एवं सम्पूर्ण विज्ञान से युक्त होकर ब्रह्मानन्द धाम को प्राप्त होता है।

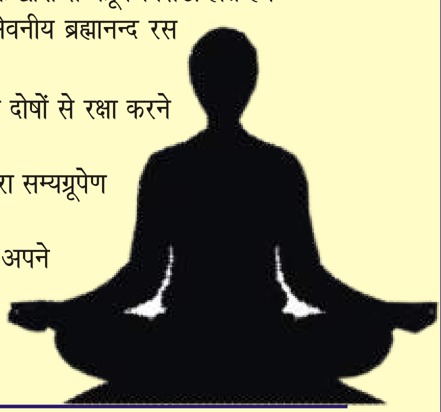

विशेष ध्यातव्य- अन्त में मैं वेद पर लेखनी उठाने वालों को सावधान करना चाहूँगा कि केवल संस्कृत व्याकरण अथवा शब्दकोषों के आधार पर वेदार्थ करना सम्भव नहीं है। इसके लिए निरुक्त, विविध ब्राह्मण ग्रन्थ, वेद की विभिन्न शाखाओं, आरण्यक, आश्वलायनादि श्रोतसूत्र एवं छन्दशास्त्र के विस्तृत अध्ययन के साथ-साथ ईश्वर प्रदत्त उच्च कोटि की ऊहा व तर्क, शुद्ध अन्तःकरण एवं ईश्वर की निष्काम व यथार्थ उपासना अनिवार्यतः अपेक्षित है। मैं वेद अथवा इसके ऋषि दयानन्दकृत भाष्य पर मिथ्या व्यंग्य करने वाले इस्लामी बन्धुओं से कहना चाहूँगा कि काँच के घर में बैठकर वेदरूपी सुदृढ़ महल पर पत्थर फैंकना बुद्धिमानी नहीं है। मैंने कुरान के तीन संस्करणों को पढ़ा है। आप भी अच्छी प्रकार बुद्धिपूर्वक पढ़ लीजिये। यह बात स्मरणीय है कि हम सब हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि बाद में, पहले सभी मानव हैं। हम सबको मिलकर एक सत्य धर्म की खोज करने का प्रयास करना चाहिए। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि में ही मिलता है, न कि अब से एक-दो हजार वर्ष पूर्व। आप कृपया अपने मजहब की जड़ को पहचानने का प्रयास करें। तदुपरान्त ही वेद पर अंगुली उठाएँ। हम तो वेद के आधार पर वर्तमान भौतिकी की गम्भीर व अनसुलझी समस्याओं का समाधान करने की क्षमता रखते हैं, क्या सम्पूर्ण इस्लामी जगत् में ऐसा कोई कुरान का जानकार है, जो कुरान के आधार पर ऐसा दावा कर सकता हो? आएँ, हम सब एक परमात्मा की सन्तान बनने का प्रयास करके मानव एकता का मार्ग अपनाएँ न कि विघटनकारी प्रयासों से मानवता को आहत करें।

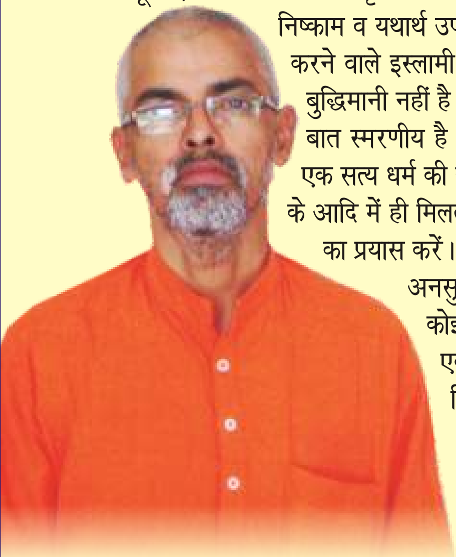

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, वैदिक वैज्ञानिक
अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल, जिला-जालोर
(राजस्थान) भारत पिन- ३४३०२९
फोन- ०२९६९ २९२१०३, चलभाष- ०९४१४१८२१७३, ०७४२४९८०९६३

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

महर्षि दयानन्द जी जैसे महान् व्यक्ति के जीवन दर्शन को मैं देखकर अभिभूत हो गया। निःसंदेह अद्भुत दर्शनदीर्घा एवं 'सत्यार्थ प्रकाश' रचनास्थली को देखकर मन में श्रद्धा एवं ऋषि के प्रति आभार उमड़ आया। कोटि-कोटि धन्यवाद इस न्यास को एवं इनके सहयोगियों को।

- गुरप्रित सिंह, लसाडिया, उदयपुर (राज.)

आज मैं उस जगह पे आया हूँ जहाँ पर महर्षि दयानन्द ठहरे थे। इस स्थान पे आकर मैं धन्य हो गया। यहाँ ट्रस्ट के द्वारा जो आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा बनायी गयी है निश्चित रूप से यह दीर्घा ज्ञान का खजाना है। मैं भी इस खजाने से ढ़ेर सारा ज्ञान प्राप्त करके जा रहा हूँ।

- अभिषेक कुमार व्यास (मुम्बई)

वैदिक विचारधारा एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अद्भुत जीवन अनुभव से अवगत होकर ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ मन को अतीव शान्ति मिली।

- आशुतोष गोस्वामी (कोटा, राज.)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब

एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

आत्मनिवेदन

गुरु का चयन

गत दिनों में अनेकों बाबाओं की घृणित सच्चाई जन सामान्य के सामने आयी है। जो लोग इन बाबाओं से लाभ ले रहे थे वे तो वर्षों से इन लोगों के पाखण्डों को जानते थे पर आँखें मूदे मौन रहकर अथवा इनके अपराधों में सक्रिय भाग ले स्वार्थ, लोभ अथवा डर की वजह से इनके सहयोगी बने हुए थे। इस क्रम में सबसे नवीन रहस्योद्घाटन अलवर के फलाहारी बाबा का है।

फलाहारी बाबा का पूरा नाम जगतगुरु रामानुजाचार्य श्री स्वामी कौशलेन्द्र प्रपन्नाचारी फलाहारी महाराज है। वो रामानुज संप्रदाय के साधु माने जाते हैं। पंजाब केसरी पत्र के अनुसार अलवर में इनका वेंकटेश दिव्य बालाजी धाम आश्रम है, जहां हर दिन भक्तों की भीड़ रहती है। फलाहारी बाबा अलवर में गोशाला भी चलाते हैं। अभी कुछ समय पहले इन्होंने आश्रम में श्री वेंकटेश की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की थी, जिसमें बड़ी तादाद में श्रद्धालु और विशिष्ठ लोग आए। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर की रहने वाली २१ साल की एक लड़की ने कौशलेन्द्र प्रपन्नाचार्य पर बिलासपुर थाने में ही जीरो एफआईआर दर्ज करवायी है। पीड़िता के बयान के बाद केस डायरी अलवर थाने में भिजवा दी गई है। अलवर पुलिस ने तथाकथित बाबा के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। आरोपी बाबा के कई बड़े नेताओं से सम्पर्क थे। वह सिर्फ फल ही खाते हैं इसलिए उनका नाम फलाहारी बाबा पड़ा।

हम बार-बार यह निवेदन करते हैं कि इन बाबाओं की दुकान केवल हम लोगों के अज्ञान तथा लापरवाही के कारण चलती है। सोचिए, जब आप बाजार में एक घड़ा भी खरीदने जाते हैं तो ठोक बजाकर देखते हैं परन्तु जिसे गुरु बना अपने और अपने परिवार का जीवन समर्पित करते हैं, उसके निर्माण की जिम्मेदारी देते हैं, क्या उसकी जाँच नहीं करनी चाहिए? अवश्य करनी चाहिए।

यहाँ हम स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन की चर्चा भी करना चाहेंगे। वे सतर्क बुद्धि से व्यक्ति को परखने में विश्वास

रखते थे। जब वे ईसाई मत से प्रभावित हो बपतिस्मा लेने फादर लीफ के यहाँ गए तो वहाँ एक पादरी तथा एक नन को आपत्तिजनक अवस्था में देख, चले आये और फिर कभी उधर का मुख नहीं किया। एक नागा साधू को एक श्रद्धालु महिला के साथ बलात्कार करने का प्रयास करते देखा तो पूरा प्रयास कर उस देवी के सतीत्व की रक्षा की, पर उनको धर्म नाम से चिढ़ हो गयी। एक मंदिर में गुसाइयों की लीला देख हैरत में पड़ गए। लड़की को अपनी हवस का शिकार बनाने को तत्पर गुसाईं ने बहाने बनाए पर उस कन्या ने स्पष्ट कहा- 'Don't believe him sir- He caught hold of me while I was touching his feet- Then I cried- Oh! Take me to my father'- स्वामी जी को इन गुसाईयों से घिन हो गयी। मूर्ति-पूजा में अविश्वास का कारण रीवां की रानी बनीं जिनके बाबा विश्वनाथ के मंदिर में पूजा करने की प्राथमिकता के कारण मुंशीराम को मंदिर प्रवेश से लौटना पड़ा। इस प्रकार का जिज्ञासु चरित्र व पैनी दृष्टि प्रत्येक की होनी चाहिए जिसके कारण मुंशीराम असत्य पन्थों से दूर रह सके, बाबाओं, धर्माचार्यों के चंगुल से बच सके। परीक्षा तो उन्होंने महर्षि दयानन्द की भी ली। बरेली में जब उनके पिता ने उन्हें महर्षि दयानन्द के सत्संग में जाने हेतु प्रेरित किया तो उनकी इच्छा तो बिलकुल न थी परन्तु पिता के आग्रह के कारण जाना पड़ा। महर्षि दयानन्द का भव्य व्यक्तित्व देखकर और अनेक अंग्रेज अधिकारियों को सत्संग सभा में बैठे देखकर ये इतने प्रभावित अवश्य हुए कि उनका प्रवचन सुनने बैठ गए, पर श्रद्धावनत हो गए हों ऐसा नहीं था। हाँ, यह

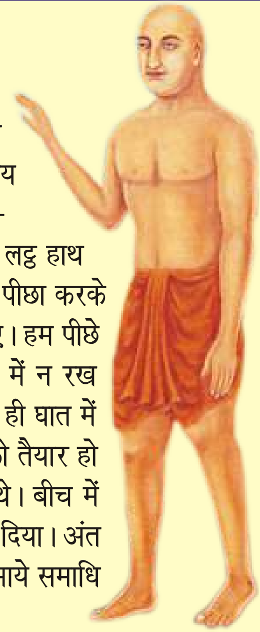

आश्चर्य अवश्य हुआ कि उनकी मान्यता के विपरीत एक संस्कृत पढ़ा लिखा व्यक्ति युक्ति-युक्त बात भी कर सकता है। ओजस्वी भाषण तथा तर्क में परास्त होने पर उन्होंने स्वामी दयानन्द जी का लोहा तो मान लिया पर गुरु अभी भी नहीं माना। जब स्वामी जी प्रातः अपनी साधना के लिए जाते थे तब उनकी परीक्षा के उद्देश्य से उन्होंने उनका पीछा करने का निश्चय किया। वे अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' में लिखते हैं-

'मुझे आचार्य दयानन्द के सेवकों से मालूम हुआ कि नित्य प्रातः शौच से निवृत्त होकर केवल कौपीन पहने, लट्ठ हाथ में लिए, साढ़े तीन बजे बाहर निकल जाते हैं और छः बजे लौटकर आते हैं। मैंने निश्चय किया कि उनका पीछा करके देखना चाहिए कि बाहर वह क्या करते हैं .... ठीक साढ़े तीन बजे बाहर निकल कर आचार्य चल दिए। हम पीछे हो लिए। पाव मील धीरे-धीरे चलकर वह इस तेजी से चले कि मुझ-सा शीघ्रगामी जवान भी उन्हें निगाह में न रख सका। आगे तीन मार्ग फटते थे हमें कुछ पता न लगा कि किधर गए। दूसरे दिन प्रातःकाल हम ढ़ाई बजे से ही घात में उस जगह छिपकर जा बैठे जहाँ से तीन मार्ग फटते थे। उस विशाल रुद्रमूर्ति को आते देखकर हम भागने को तैयार हो गए। वह तेज चलते थे और मैं पीछे भाग रहा था। मेरे पीछे बनिए एडिटर भी लुढ़कते-पुढ़कते आ रहे थे। बीच में एक-आध मील की दौड़ भी रुद्र स्वामी ने लगायी। परन्तु वहाँ मैदान था, मैंने उन्हें आँख से ओझल न होने दिया। अंत को पाव मील धीरे-धीरे चलकर एक पीपल के वृक्ष तले बैठ गए। घड़ी से मिलाया तो पूरे डेढ़ घंटे आसन जमाये समाधि में स्थित रहे। प्राणायाम करते नहीं प्रतीत हुए, आसन जमाते ही समाधि लग गयी।

अब विचार कीजिए। गुरु बनाने से पूर्व आप करते हैं इतनी परीक्षा। अगर प्रत्येक व्यक्ति ऐसी ही परीक्षा लेने लगे तो वह देख सकेगा कि गुरु क्षमा के स्थान पर क्रोध की मूर्ति तो नहीं है। अपरिग्रह, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय-निग्रह, संयम, त्याग, करुणा, समत्व और सादगी का उसके जीवन में कितना स्थान है। इन कसौटियों पर जब आप कसने लगेंगे तो समाज इन ढोंगियों से मुक्त हो जाएगा। परन्तु आप क्या देखते हैं- यह गुरु आपके कष्ट-हरण का कितना आसान उपाय बताता है, इसके भक्त कितने और कौन-कौन हैं? यह कितनी चमत्कारिक (दैवीय) शक्तियों से युक्त है? आदि-आदि। बस यही सारी समस्या की जड़ है। इन गुरुओं की तड़क भड़क आपको परेशान नहीं करती, आकर्षित करती है। आप नहीं सोचते हैं कि इन लोगों को मेकअप मेन की क्या आवश्यकता है? सादगी साधना में कहाँ बाधक है? राजसी ठाठबाट और एशोआराम के सामान की उपस्थिति के क्या मायने हैं? आप नहीं सोचते, नाच-नाच कर प्रवचन देने का आडम्बर क्यों? अगर समाज को और स्वयं को इन ठगों से बचाना है तो श्रद्धानन्द की भाँति जिज्ञासु बन सच्चे गुरु की खोज करें।

"अगर समाज को और स्वयं को इन ठगों से बचाना है तो श्रद्धानन्द की भाँति जिज्ञासु बन सच्चे गुरु की खोज करें।"

स्पष्ट है कि मुंशीराम जहाँ गए आँख खुली और बुद्धि को जागृत रखा। स्वामी दयानन्द जैसे वीतराग को भी पहले परखा। तभी सच्चे शिष्य को सच्चा गुरु मिल सका। इस आलेख के कुछ पाठक स्वामी श्रद्धानन्द के बारे में यह धारणा बना सकते हैं कि वे श्रद्धा-विहीन थे पर अगर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं तो वे गलत होंगे। क्योंकि सत्य में श्रद्धा ही सत्य कही जाती है असत्य अथवा अविद्या में नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी के तो रोम-रोम में सत्य विराजमान था। उनसे बड़ा श्रद्धालु भला कौन था? वे अपनी आत्मकथा में अपने संन्यास ग्रहण के समय लिखते हैं-

'श्रद्धा से प्रेरित होकर ही मैंने आज तक इस जीवन को पूरा किया है। श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्य देवी है। अब भी श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर मैं संन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ। इस कारण इस यज्ञकुण्ड की अग्नि को साक्षी करके मैं अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखता हूँ, जिससे मैं अगला सारा जीवन भी श्रद्धामय बनाने में सफल रहूँ।'

तो जिस किसी को आप गुरु के सिंहासन पर विराजमान करें उसकी छानबीन अवश्य करें। इसमें कोई बुराई नहीं है। जब आप ऐसा करेंगे तो आप को पता चलेगा कि गरीबी से नित्य दो-दो हाथ करने वाले तथाकथित धर्मगुरु किस प्रकार करोड़पति बन जाते हैं। यही स्थिति अलवर के फलाहारी बाबा की है। कथा सुनाकर जीविकोपार्जन करने वाले फलाहारी महाराज के पास आज करोड़ों की सम्पत्ति है तथा कई राजनेताओं के साथ उनके सम्बन्ध बताए गए हैं। बाबा ९० के दशक में राजस्थान के अलवर में आए और अशोका टाकीज के पास नारायणी धर्मशाला में रहने लगे। उस वक्त उनके पास कुछ नहीं था और कथा सुनाकर अपनी जीविकोपार्जन करते थे। फलाहारी महाराज अलवर में कई धर्मशालाओं में रहे और बैकुण्ठधाम में हवन एवं कथा का वाचन किया। किन्हीं कारणों से फलाहारी महाराज को अशोका टॉकीज के पास स्थित नारायणी धर्मशाला से बेदखल

कर दिया गया। इस दौरान फलाहारी महाराज ने कई संभ्रान्त परिवारों से नाता जोड़ लिया। बाबा ने १९९८ में काला कुआँ के समीप ४०० वर्ग गज जमीन लेकर अपना आश्रम बनाया। इसके बाद उसने पलटकर नहीं देखा। बाबा करोड़ों की सम्पत्ति का मालिक बन गया।

जब आप छानबीन करेंगे तो आपको पता चलेगा कि ईसाई पादरियों की चंगाई सभाओं में चंगा होने का दावा करने वाले उन्हीं के एजेंट हैं और इस तरह की चमत्कारिक चंगाई किसी को चंगा नहीं बना सकती। तब आपको पता चलेगा कि पानी की सतह पर चलने वाले व्यक्ति ने वास्तव में स्वीमिंग पूल में फ्लेक्सी ग्लास की चादर का प्रयोग किया है, तब आपको पता चलेगा कि हवा में हाथ फैलाकर स्विस घड़ियाँ पैदा कर देना सिर्फ हाथ की सफाई भर है, तब आपको ज्ञात होगा कि दो असमान पैरों के इंसान के छोटे पैर को बड़ा कर देना कोई दैवीय चमत्कार नहीं बल्कि चतुराई मात्र है। गुरु का आंकलन चमत्कारों से नहीं बल्कि उसके सदाचार व उदात्त गुणों से करिए। आप विवेक का प्रयोग करेंगे तो महसूस करेंगे कि आध्यात्मिक गुरु को कमांडो व हथियारों की आवश्यकता ही नहीं फिर क्यों ये तथाकथित स्वयंभू भगवान अंगरक्षकों से घिरे रहते हैं, क्यों इनके आश्रमों की चारदिवारी किले जैसी बनायीं जातीं हैं, क्यों इनके व्यक्तिगत कक्षों तक केवल महिलाओं को जाने की इजाजत होती है? कहते हैं कि जो ईमानदार होते हैं उनके मोबाइल में लॉक नहीं होता, इसी प्रकार सच्चा गुरु खुली किताब होता है उसका कोई हिस्सा राजदार नहीं होता। परन्तु आज के बाबाओं के आश्रमों में न जाने क्या-क्या खुफिया होता है।

आप महर्षि दयानन्द का उदाहरण लीजिये। बिना लाग लपेट के सत्य कथन की प्रवृत्ति के कारण असंख्य लोग उनके दुश्मन बन गए, उनके जीवन पर एक बार नहीं बीसियों बार वार किये गए, काशी शास्त्रार्थ के समय सभास्थल पर काशी के छटे हुए गुंडों को देख भक्त बलदेव ने आक्रमण की आशंका जतायी तो ऋषि ने कहा- 'एक सत्य है, एक धर्म है, एक ईश्वर है फिर भय कैसा? क्या कभी किसी ने महर्षि के साथ अंगरक्षकों का काफिला देखा? उनका आत्मबल ही सैंकड़ों आततायियों का सामना करने में समर्थ था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर नजर डालिए, जिनका बलिदान दिवस इसी माह में २३ तारीख को है, जब अंग्रेजों के आदेश पर सिपाहियों ने बंदूक सामने की तो इस ईश-पारायण संन्यासी ने अपना सीना खोलकर संगीनों के सामने रख दिया। यह साहस केवल अध्यात्मजनित आत्मबल से आता है जो आज के तथाकथित भगवानों में शून्य होता है। तभी अपनी करनी की सजा मिलने पर जार-जार रोने में इन्हें शर्म की अनुभूति नहीं होती।

"गुरु का आंकलन चमत्कारों से नहीं बल्कि उसके सदाचार व उदात्त गुणों से करिए।"

आज समाज की और हमारी स्थिति क्या है? ढोंगी बाबाओं की जब पोल खुलती है कुछ समय तक चर्चा होती है, हम फिर सब कुछ भूल जाते हैं और एक नए रामपाल या राम-रहीम के प्रादुर्भाव की पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है। अगर एक काण्ड से हम शिक्षा लेकर गाँठ बाँध लें तो शायद कुछ बात बने।

उदाहरण के तौर पर यदि हम ८० के दशक के ढोंगी बाबा श्रद्धानन्द और उसकी शिकार मैसूर रियासत के दीवान की नवासी शकीरा जो कि पुत्र चाहत में इस ढोंगी के चंगुल में फंसी थी, की परिणिति को ध्यान में रखें तो संभल सकते हैं। शकीरा के पास क्या नहीं था? पृष्ठभूमि की बात करें तो वह मैसूर के नबाब सर मिर्जा इस्माइल की नवासी थी, अत्यधिक सुन्दर थी, सम्पन्नता का अंदाजा मात्र इसी से लगाया जा सकता है कि बैंगलोर के पॉश इलाके- रिचमंड रोड- पर करीब ३८ हजार वर्गफुट में फैला आलीशान बंगला था। परिवार की बात करें तो पति अकबर खलीली एक आई.एफ.एस. आफिसर थे {जो उस समय ईरान के दूतावास में कार्यरत थे} और चार बेटियाँ। हाँ बेटा नहीं था यह शायद शकीरा खलीली को खलता था और यह अनुष्ठानों से संभव हो सकता है यह मिथ्या (सृष्टिक्रम से विरुद्ध) आश्वासन ही उसकी तथाकथित रूप से

दैवीय शक्तियों के स्वामी मुरली मनोहर मिश्रा उर्फ स्वामी श्रद्धानन्द से नजदीकियों का कारण बना जिसका अंत शकीरा की पूर्ण बर्बादी से हुआ। धूर्त स्वामी ने शकीरा को बहकाया कि वह परालौकिक शक्तियों के जरिये शकीरा की वर्षों पुरानी बेटे की चाहत पूरी कर सकता है। धीरे-धीरे उसने शकीरा को इतना विश्वास में ले लिया कि १९८५ आते-आते शकीरा ने अपने पति से तलाक ले लिया और फिर श्रद्धानन्द से शादी कर ली। शादी के कुछ ही सालों के भीतर श्रद्धानन्द ने शकीरा की तमाम संपत्तियों की पावर ऑफ अटार्नी अपने नाम करवा ली। साथ ही उसने शकीरा के साथ कई संयुक्त बैंक खाते और लाकर भी खुलवा लिए। जादू वो जो सर चढ़कर बोले। शकीरा को श्रद्धानन्द के खतरनाक इरादों की तनिक भी भनक नहीं लगी। शायद यही इन ढोंगी बाबाओं की इकलौती खूबी होती है। २८ मई १९९१ को श्रद्धानन्द ने घर में काम करने वाले सभी नौकरों को छुट्टी दे दी। श्रद्धानन्द ने शकीरा की चाय में नशे की गोलियाँ मिला दीं। गहरी नींद आ जाने के बाद उसने शकीरा को उसकी चादर और तकिये समेत घसीटकर लकड़ी के एक ताबूत में बंद कर दिया। इसके बाद उसने यह ताबूत घर के आँगन में खोदे गए गड्ढे में डाल दिया और ऊपर से मिट्टी भरकर शकीरा को जिंदा ही दफन कर दिया।

शकीरा की गुमशुदगी के बारे में श्रद्धानन्द रिश्तेदारों विशेषरूप से शकीरा की मुम्बई में रहने वाली बेटी से झूँठ बोलता रहा, पर बेटी सबा को उस पर शक हो गया और उसने अपने प्रयास नहीं छोड़े। उसी के प्रयासों के चलते मार्च १९९४ में 'गुमशुदा' शकीरा को खोजने की जिम्मेदारी सेन्ट्रल क्राइम ब्रांच (बैंगलोर) को सौंप दी गई। क्राइम ब्रांच ने एक महीने के भीतर ही इस मामले की गुत्थी सुलझा डाली। ३० मार्च, १९९४ की सुबह पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में शकीरा की लाश निकाली गई और इस प्रक्रिया का वीडियो बनाया गया। बाद में यह वीडियो बतौर साक्ष्य कोर्ट में पेश किया गया। बैंगलोर जिला न्यायालय ने इस मामले में सजा सुनाने में लगभग ११ साल का समय लिया और अंततः स्वामी श्रद्धानन्द को फांसी की सजा सुनाई। कर्नाटक उच्च्व न्यायालय ने भी जिला न्यायालय के फैसले को सही माना। उच्च्व न्यायालय ने माना कि जिस निर्दयता से श्रद्धानन्द ने उस व्यक्ति की हत्या की जो उस पर सबसे ज्यादा विश्वास करती थी, उसे देखते हुए फांसी की सजा ही उसके लिए एक मात्र विकल्प है। मामला उच्चतम न्यायालय में गया जहाँ अंततोगत्वा श्रद्धानन्द की सजा तय करते हुए सर्वोच्च्व अदालत ने माना कि इस मामले में फांसी की सजा ज्यादा ही कठोर है और उम्रकैद (जो १४ साल की होती है) की सजा बहुत कम। इसीलिए न्यायालय ने बीच का रास्ता निकालते हुए उसकी फांसी तो माफ की लेकिन ताउम्र जेल में रहने की शर्त पर।

बेशक इस मामले में न्याय हुआ। परन्तु हमारा मानना है कि 'पारलौकिक शक्तियों की सहायता से बेटा पैदा करना संभव है' श्रद्धानन्द के इस प्रलोभन को असंभव मान शकीरा ने उससे दूरी बनायी होती तो शायद वह अपने सुखी परिवार के साथ जिंदा होती। अन्य ढोंगी बाबाओं में भी इस श्रद्धानन्द का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है, इसी से हमने यह मामला यहाँ उद्धृत किया है।

सृष्टिक्रम के विरुद्ध कुछ संभव नहीं है अत ऐसे लालच देने वाले चमत्कारों से लुभाने वाले तथाकथित संतों से सजग रहें यही अनुरोध है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा

दोहराता हूँ सुनो रक्त से लिखी हुई कुरबानी
जिसके कारण मिट्टी भी चन्दन है राजस्थानी।।
रावल रत्न सिंह को छल से कैद किया खिलजी ने,
कालजयी मित्रों से मिलकर दगा किया खिलजी ने,
खिलजी का चित्तौड़ दुर्ग में एक संदेशा आया,
जिसको सुनकर शक्ति शौर्य पर फिर अँधियारा छाया।
दस दिन के भीतर न पद्मिनी का डोला यदि आया,
यदि न रूप की रानी को तुमने दिल्ली पहुँचाया,
तो फिर राणा रत्नसिंह का शीश कटा पाओगे,
शाही शर्त ना मानी तो पीछे पछताओगे।
दारुण संवाद लहर सा दौड़ गया क्षण भर में,
यह बिजली की तरह छितर से फैल गया अम्बर में,
महारानी हिल गयीं शक्ति का सिंहासन डोला था,
था सतीत्व मजबूर जुल्म विजयी स्वर में बोला था।
रुष्ट हुए बैठे थे सेनापति गोरा रणधीर,

यह कह, गोरा के कदमों पर झुकी पद्मिनी रानी।
यह क्या करती हो गोरा पीछे हट बोला,
और राजपूती गरिमा का फिर धधक उठा था शोला,
महारानी हो तुम सिसोदिया कुल की जगदम्बा हो,
प्राण प्रतिष्ठा एकलिंग की ज्योति अग्निगंधा हो।
जब तक गोरा के कंधे पर दुर्जय शीश रहेगा,
महाकाल से भी राणा का मस्तक नहीं कटेगा,
तुम निश्चिन्त रहो महलों में देखो समर भवानी,
और खिलजी देखेगा केसरिया तलवारों का पानी।
राणा के सकुशल आने तक गोरा नहीं मरेगा,
एक पहर तक सर कटने पर धड़ युद्ध करेगा,
एकलिंग की शपथ महाराणा वापस आएँगे,
महाप्रलय के घोर प्रभन्जन भी न रोक पाएँगे।
शब्द-शब्द मेवाड़ी सेनापति का था तूफानी,
शंकर के डमरू में जैसे जागा वीर भवानी,

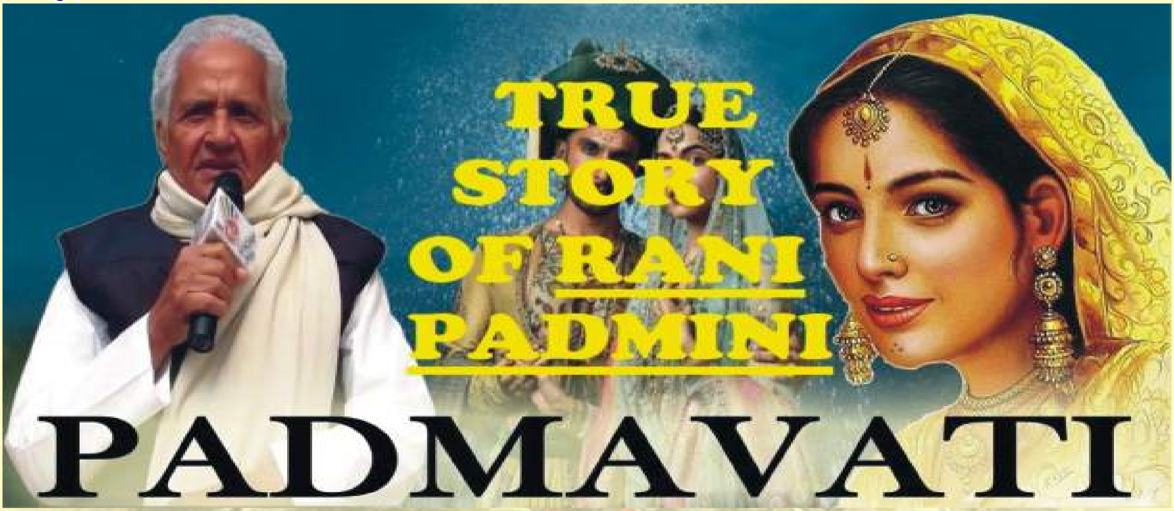

जिनसे रण में भय खाती थी खिलजी की शमशीर,
अन्य अनेकों मेवाड़ी योद्धा रण छोड़ गए थे,
रत्नसिंह की संधि नीति से नाता तोड़ गए थे।
पर रानी ने प्रथम वीर गोरा को खोज निकाला,
वन-वन भटक रहा था मन में तिरस्कार की ज्वाला,
गोरा से पद्मिनी ने खिलजी का पैगाम सुनाया,
मगर वीरता का अपमानित ज्वार नही मिट पाया।
बोला, मैं तो बहुत तुच्छ हूँ राजनीति क्या जानूँ,
निर्वासित हूँ राज मुकुट की हठ कैसे पहचानूँ,
बोली पद्मिनी समय नहीं है वीर क्रोध करने का,
अगर धरा की आन मिट गयी घाव नही भरने का।
दिल्ली गयी पद्मिनी तो पीछे पछताओगे,
जीते जी राजपूती कुल को दाग लगा जाओगे,
राणा ने जो कहा किया वो माफ करो सेनानी,

जिसके कारण मिट्टी भी चन्दन है राजस्थानी।
दोहराता हूँ सुनो रक्त से लिखी हुई कुरबानी।।
खिलजी मचला था पानी में आग लगा देने को,
पर पानी प्यासा बैठा था ज्वाला पी लेने को,
गोरा का आदेश हुआ सज गए सात सौ डोले,
और बाँकुरे बादल से गोरा सेनापति बोले।
खबर भेज दो खिलजी पर पद्मिनी स्वयं आती है,
अन्य सात सौ सखियाँ भी वो साथ लिए आती है,
स्वयं पद्मिनी ने बादल का कुमकुम तिलक किया था,
दिल पर पत्थर रख कर भीगी आँखों से विदा किया था।
और सात सौ सैनिक जो यम से भी भिड़ सकते थे,
हर सैनिक सेनापति था लाखों से लड़ सकते थे,
एक-एक कर बैठ गए सज गयी डोलियाँ पल में,
मर मिटने की होड़ लग गयी थी मेवाड़ी दल में।

हर डोली में एक वीर था चार उठाने वाले,
पाँचों ही शंकर के गण की तरह समर मतवाले,
बज कूच शंख सैनिकों ने जयकार लगाई,
'हर-हर महादेव' की ध्वनि से दशों दिशा लहराई।
गोरा बादल के अंतस में जगी जोत की रेखा,
मातृभूमि चित्तौड़ दुर्ग को फिर जी भरकर देखा,
कर प्रणाम चढ़े घोड़ो पर सुभग अभिमानी,
देश भक्ति की निकल पड़े लिखने वो अमर कहानी,
जिसके कारण मिट्टी भी चन्दन है राजस्थानी,
दोहराता हूँ सुनो रक्त से लिखी हुई कुरबानी।।
जा पहुँचीं डोलियाँ एक दिन खिलजी की सरहद में,
उधर दूत भी जा पहुँचा खिलजी के रंग महल में,
बोला शहंशाह पद्मिनी मल्लिका बनने आयी है,
रानी अपने साथ हुस्न की कलियाँ भी लायी है।
एक मगर फरियाद उसकी फकत पूरी करवा दो,
राणा रत्नसिंह से एक बार मिलवा दो,
खिलजी उछल पड़ा कह फौरन यह हुक्म दिया था,
बड़े शौक से मिलने का शाही फरमान दिया था।
वह शाही फरमान दूत ने गोरा तक पहुँचाया,
गोरा झूम उठे छन बादल को पास बुलाया,
बोले बेटा वक्त आ गया अब कट मरने का,
मातृभूमि मेवाड़ धरा का दूध सफल करने का।
यह लोहार पद्मिनी भेष में बंदी गृह जायेगा,
केवल दस डोलियाँ लिए गोरा पीछे धायेगा,
यह बंधन काटेगा हम राणा को मुक्त करेंगे,
घुड़सवार उधर आगे को भी तैयार रहेंगे।
जैसे ही राणा आएँ वो सब आँधी बन जाएँ,
और उन्हें चित्तौड़ दुर्ग पर वो सकुशल पहुँचाएँ,
अगर भेद खुल गया वीर तो पल की देर न करना,
और शाही सेना पहुँचे तो बढ़ कर रण करना।
राणा जाएँ जिधर शत्रु को उधर न बढ़ने देना,
और एक यवन को भी उस पथ पर पावँ ना धरने देना,
मेरे लाल लाडले बादल आन न जाने पाए,
तिल-तिल कट मरना मेवाड़ी मान न जाने पाए।
ऐसा ही होगा काका राजपूती अमर रहेगी,
बादल की मिट्टी में भी गौरव की गंध रहेगी,
तो फिर आ बेटा बादल सीने से तुझे लगा लूँ,
हो न सके शायद अब मिलन अंतिम लाड लड़ा लूँ।
यह कह बाँहों में भर कर बादल को गले लगाया,
धरती काँप गयी अम्बर का अंतस मन भर आया,
सावधान कह पुन: पथ पर बढ़े गोरा सैनानी,
पोछ लिया झट से बढ़कर के बूढ़ी आँखों का पानी,
जिसके कारण मिट्टी भी चन्दन है राजस्थानी।

दोहराता हूँ सुनो रक्त से लिखी हुई कुरबानी।।
गोरा की चातुरी चली राणा के बंधन काटे,
छांट-छांट कर शाही पहरेदारों के सर काटे,
लिपट गए गोरा से राणा गलती पर पछताए,
सेनापति की नमक हलाली देख नयन भर आये।
पर खिलजी का सेनापति पहले से ही शंकित था,
वह मेवाड़ी चट्टानी वीरों से आतंकित था,
जब उसने लिया समझ पद्मिनी नहीं आयी है,
मेवाड़ी सेना खिलजी की मौत साथ लायी है।
पहले से तैयार सैन्य दल को उसने ललकारा,
निकल पड़ा टिड्डि दल का बजने लगा नगाड़ा,
दृष्टि फिरी गोरा की राणा को समझाया,
रण मतवाले को रोका जबरन चित्तौड़ पठाया।
राणा चले तभी शाही सेना लहरा कर आयी,
खिलजी की लाखों नंगी तलवारें पड़ी दिखाई,
खिलजी ललकारा दुश्मन को भाग न जाने देना,
रत्नसिंह का शीश काट कर ही वीरों दम लेना।
टूट पड़ो मेवाड़ी शेरो बादल सिंह ललकारा,
'हर-हर महादेव' का गरजा नभ भेदी जयकारा,
निकल डोलियों से मेवाड़ी बिजली लगी चमकने,
काली का खप्पर भरने तलवारें लगीं खड़कने।
राणा के पथ पर शाही सेनापति तनिक बढ़ा था,
पर उसपर तो गोरा हिमगिरि सा अड़ा खड़ा था,
कहा जफर से एक कदम भी आगे बढ़ न सकोगे,
यदि आदेश न माना तो कुत्ते की मौत मरोगे।
रत्नसिंह तो दूर न उनकी छाया तुझे मिलेगी,
दिल्ली की भीषण सेना की होली अभी जलेगी,
यह कह, महाकाल बन गोरा रण में हुंकारा,
लगा काटने शीश, बही समर में रक्त की धारा।
खिलजी की असंख्य सेना से गोरा घिरे हुए थे,
लेकिन मानो वे रण में मृत्युंजय बने हुए थे,
पुण्य प्रकाशित होता है जैसे अग्नित पापों से,
फूल खिला रहता असंख्य कांटों के संतापों से।
वो मेवाड़ी शेर अकेला लाखों से लड़ता था,
बढ़ा जिस तरफ वीर उधर ही विजय मंत्र बढ़ता था,
इस भीषण रण से दहली थी दिल्ली की दीवारें,
गोरा से टकरा कर टूटी खिलजी की तलवारें।
मगर कयामत देख अंत में छल से काम लिया था,
गोरा की जंघा पर अरि ने छिप कर वार किया था,
वहीं गिरे वीरवर गोरा जफर सामने आया,
शीश उतार दिया धोखा देकर मन में हर्षाया।
मगर वाह रे मेवाड़ी गोरा का धड़ भी दौड़ा,
किया जफर पर वार कि जैसे सर पर गिरा हथौड़ा,

एक बार में ही शाही सेनापति चीर दिया था,
जफर मोहम्मद को केवल धड़ ने निर्जीव किया था।
ज्यों ही जफर कटा शाही सेना का साहस लरजा,
काका का धड़ लख बादल सिंह महारुद्र सा गरजा,
अरे कायरो नीच बाँगड़ों छल से रण करते हो,
किस बूते पर जवान मर्द बनने का दम भरते हो।

यह कह कर बादल उस छण बिजली बन करके टूटा था,
मानो धरती पर अम्बर से अग्नि शिरा छूटा था,
ज्वालामुखी फटा हो जैसे दरिया हो तूफानी,
सदियों दोहराएँगी बादल की रण रंग कहानी।
अरि का भाला लगा पेट में आंते निकल पड़ी थीं,
जख्मी बादल पर लाखों तलवारें खिंची खड़ी थीं,
कसकर बाँध लिया आँतों को केशरिया पगड़ी से,
किंचित डिगा न वो प्रलयंकर सम्मुख मृत्यु खड़ी से।
अब बादल तूफान बन गया शक्ति बनी फौलादी,
मानो खप्पर लेकर रण में लड़ती हो आजादी,
उधर वीरवर गोरा का धड़ अरि-दल काट रहा था,
और इधर बादल लाशों से भूतल पाट रहा था।
आगे पीछे दाएँ बाएँ जम कर लड़ी लड़ाई,
उस दिन समर भूमि में लाखों बादल पड़े दिखाई,
मगर हुआ परिणाम वही की जो होना था,
उनको तो कण-कण अरियों के शोणित से धोना था।
अपनी सीमा में राणा सकुशल पहुँच गए थे,
गोरा बादल तिल-तिल कर रण में खेत रहे थे,
एक-एक कर मिटे सभी मेवाड़ी वीर सिपाही,
रत्नसिंह पर लेकिन रंचित आँच न आने पायी।
गोरा-बादल के शव पर भारत माता रोई थी,
उसने अपनी दो प्यारी ज्वलन्त मणियाँ खोयी थीं,
धन्य धरा मेवाड़, धन्य गोरा बादल अभिमानी,
जिनके बल से रहा पद्मिनी का सतीत्व अभिमानी,
जिसके कारण मिट्टी भी चन्दन है राजस्थानी।
दोहराता हूँ सुनो रक्त से लिखी हुई कुरबानी।।

साभार - पंडित श्री नरेंद्र मिश्र जी
(मेवाड़ राजवंश के राजकवि)

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

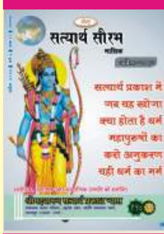

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

सत्यार्थ प्रकाश

वेद ही सभी भाषाओं का मूल स्रोत है।
- डॉ. मीमांसक, दिल्ली
झंडोत्तोलन
(द्वारा- स्वामी (डॉ. ओम् आनन्द सरस्वती)
सत्यार्थ प्रकाश एक जादू है।
- स्वामी सदानन्द, अध्यक्ष (दयानन्द मठ, दीनानगर)
सत्यार्थ प्रकाश पढने से समस्त भ्रान्तियाँ दूर हो जाती हैं।
- स्वामी सुमेधानन्द, न्यासी एवं सांसद
वेद ज्ञान से सभी समस्याओं का समाधान सम्भव
- गुलाबचन्द कटारिया, गृहमंत्री (राज.)
आर्य समाज की राष्ट्रहित में अहम् भूमिका है
- सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से पाखण्डों का खण्डन किया जाये।
- ठाकुर विक्रम सिंह, अध्यक्ष (राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली)
ज्ञान को आचरण में उतारें
- लोकायुक्त एस. एस. कोठारी
महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी को पढ़ लिया जाये तो जीवन में कभी हताशा निराशा नहीं आ सकती है।
- स्वामी प्रणवानन्द, अधिष्ठाता (गुरुकुल गौतम नगर)
नारी को शस्त्र और शास्त्र दोनों में पारंगत होकर आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए।
- साध्वी पुष्पा सरस्वती, रेवाड़ी
संसार का ज्ञात भौतिक विज्ञान अभी वैदिक विज्ञान से बहुत पीछे है।
- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, अध्यक्ष स्वस्ति पन्था न्यास, भीनमाल
सत्यार्थ प्रकाश वेद ज्ञान की ओर जन जन को प्रवृत्त करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- स्वामी आर्यवेश, प्रधान (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

महोत्सव-२०१७

नैतिक मूल्यों की स्थापना विद्यालयी पाठ्यक्रमों का लक्ष्य हो। - आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली
परिवार-निर्माण हेतु सत्यार्थ-शिक्षाओं को अपनावें। - स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती (पिण्डवाडा)
वेदों के ज्ञान से नई पीढ़ी अपने चरित्र को उत्तम बनाए। - श्री विजय शर्मा, भीलवाड़ा (न्यासी)
समाज कल्याण के लिए सत्यार्थ प्रकाश का अधिकाधिक प्रचार किया जाए। - डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई
सत्यार्थ प्रकाश वेदादि सत्य शास्त्रों का सार है। - डॉ. आनन्द कुमार, पूर्व आई.पी.एस.(दिल्ली)
हमारे देश की वर्षों की गुलामी का मुख्य कारण वेदों से दूर होना है। - श्री विनय आर्य, महामंत्री (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)
युवाओं द्वारा प्रेरक प्रस्तुतियाँ
जन जन को संस्कारित करने हेतु आर्य समाज एवं सत्यार्थ प्रकाश का महत्वपूर्ण योगदान है। - श्री टी.सी. डामोर, पूर्व कुलपति-रा. गा. जन. विश्वविद्यालय
अन्धविश्वास-निर्मूलन में आर्य समाज ने प्रभावी भूमिका निभायी है। - श्री अरुण अब्रोल, महामंत्री- मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा
वेद में दिए गए आचार विचार, व्यवहार, संस्कार के ज्ञान से ही हम श्रेष्ठ मनुष्य बन सकते हैं। - डॉ. गायत्री पंवार, जयपुर
वेद में सब सत्य विद्याएँ बीज रूप में उपस्थित हैं। - आचार्य वेदप्रिय शास्त्री (सीतावाड़ी, राज.)
सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैज्ञानिक आधार पर सभी सामाजिक बुराईयों को दूर करने हेतु मार्ग प्रशस्त किया है। - डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी

वेद कहता है अन्तरिक्ष के ग्रहों पर एलियन रहते हैं

परमात्मा ने यह सृष्टि प्राणियों के लिए सृजित की है। यह ब्रह्माण्ड पंचतत्वों से बना है। पंचतत्व- पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु आकाश हैं। इनके अलावा कोई तत्व नहीं है। इन पंचतत्वों के अंश परमाणु रूप में पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं। जब कहीं इन परमाणुओं का मेल होता है, धीरे-धीरे जब आपस में घर्षण होता है तो इन तत्वों का मेल मजबूत होता जाता है और वे तत्व पृथ्वी के समान दृढ़ होकर लोक लोकान्तर के रूप में आकाश में भ्रमण करते रहते हैं और इन लोक लोकान्तरों में और ग्रह नक्षत्रों में ये ही पंचतत्व विद्यमान रहते हैं।

इस ब्रह्माण्ड में अनेक लोक लोकान्तर हैं, जिनका पता करना दुष्कर कार्य है। अमेरिका और विश्व के अनेक वैज्ञानिकों ने ब्रह्माण्ड में पृथ्वी के समान वातावरण वाले लोकों की भी खोज की है। हो सकता है वहाँ पर मानव बस्तियाँ हों। जिस प्रकार पृथ्वी पर पंचतत्व विद्यमान हैं उसी प्रकार उन लोकों में पंचतत्व होने चाहिये और वहाँ पर भी प्राणियों का निवास होना चाहिये। हम वेद को समस्त विद्याओं का मूल मानते हैं। इसलिये वेद में लोक लोकान्तरों में प्राणी बस्ती होने का उल्लेख होना चाहिये। वेद में प्राणी के लिये क्या-क्या आवश्यक है यह मिलता है। ऋग्वेद के निम्न (पृष्ठ ७०, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित।) मंत्र में कहा है-

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।।

- ऋग्वेद १/१३९/११

हे! (देवासः) विद्वानो, तुम से जो (दिवि) सूर्यादिलोक में (एकादश) दस प्राण और ग्यारवाँ जीव है वा जो (पृथिव्याम्) पृथिवी में (एकादश) उक्त एकादश गण (अधिस्थ) अधिष्ठित हैं वा जो (महिन्य) महत्व के साथ (अप्सुक्षितः) अन्तरिक्ष व जलों में निवास करने हारे (एकादशः) दशेन्द्रिय और मन (स्थ) है (ते) वे जैसे हैं उनको जानके हे (देवाशः) विद्वानो तुम (इमम्) इस (यज्ञम्) संग करने योग्य व्यवहार रूप यज्ञ को (जुषध्वम्) प्रीतिपूर्वक सेवन करो।

परमात्मा का प्रत्येक कार्य बुद्धिपूर्ण है। ईश्वर ने सृष्टि में, जो पदार्थ सूर्यादि में हैं अर्थात् जो अन्यत्र वर्तमान हैं ये ही यहाँ हमारी पृथ्वी पर हैं जितने यहाँ हैं उतने ही वहाँ हैं, और लोकों में हैं। अगर हम उनको यथावत् जान लेते हैं तो उससे हमारी सुख, समृद्धि, योगक्षेम की निरन्तर वृद्धि होगी। इसीलिये हमारे वैज्ञानिक अन्तरिक्ष में निरन्तर खोज कर रहे हैं।

वेद कहता है जब सूर्यादिलोक में दस प्राण और ग्यारवाँ जीव है तो फिर जीव जो शरीर के आधार पर जिस लोक में रहता है उसका आनन्द भोगता है। वेद कहता है दस इन्द्रियों और ग्यारहवाँ मन भी वहाँ है तो इन लोकों में किस प्रकार के शरीर होंगे। जिस लोक का जैसा वातावरण होगा वैसे ही वहाँ शरीर हो सकते हैं। जिस प्रकार सूर्यादि लोक में दस प्राण अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय रहते हैं और वह यह दस प्राण शरीर में ही रहते हैं ताकि शरीर का संचालन हो सके। जब शरीर हैं तो जीव तो रहेगा ही। इससे ऐसा लगता है कि ब्रह्माण्ड में जितने भी ग्रह, नक्षत्र, आकाश गंगा दिख रही हैं और ग्रहों के आस पास जो उपग्रह घूम रहे हैं उन सब पर प्राणी, वनस्पति, औषधी होने ही चाहिये क्योंकि जब जीव रहता है उसको शरीर की आवश्यकता रहती है और शरीर को चलाने के लिये उसके साधन भी आवश्यक हैं।

आज वैज्ञानिकों ने ब्रह्माण्ड में ऐसे ऐसे लोकों का पता लगाया है, जिनका वातावरण पृथ्वी के समान है। हो सकता है वहाँ पर पृथ्वी जैसी ही मानव सभ्यता विकसित हो। यह भी हमें ध्यान रखना होगा कि प्रत्येक वस्तु की सीमा होती है। उसी प्रकार लोक लोकान्तरों की सीमा और वातावरण भी अलग अलग हो सकता है। जिस प्रकार पृथ्वी पर रहने वाले जीव जिनकी भी

सीमा बनी है। अगर पानी में से मछली को निकाल दिया जाय तो वह मर जाती है और जमीन पर रहने वाले पानी में नहीं रह

सकते। अगर उनको अन्दर जाना हो तो साधन लेकर ही जाना पड़ता है। आकाश में कई कीट रहते हैं जो धरती पर मर जाते हैं जैसे मछली जल में रहते हुए भी प्राणवायु ग्रहण करती है लेकिन पानी से बाहर मर जाती है। जलचरों का जीवन जल है। वायुचरों का जीवन वायु है। इसीलिये परमात्मा ने अन्तरिक्ष में मनुष्य की सीमा को बांध रक्खा है। अगर उसे वायुमण्डल से बाहर कर दिया जाय तो जी नहीं सकता उसी प्रकार अन्य लोकों में रहने वालों की भी सीमा अवश्य होगी। अगर वे उस वातावरण से बाहर आते हैं तो जी नहीं सकेंगे। जिस प्रकार पृथ्वी पर मानव ने वैज्ञानिक उन्नति कर जो लोकान्तर में है उसका पता वह पृथ्वी पर लगा रहा है। अपने रोबोट भेजकर रिमोट से कन्ट्रोल कर लेता है, वैसे ही अन्य लोकों के मानव भी इस विद्या को जानते ही होंगे। तभी तो वे खोज खबर लेने यहाँ तक आ जाते हैं।

सारी सृष्टि का आधार सत्व, रज और तम का ही परिणाम है। जिस प्रकार हम पृथ्वी लोक में रहते हैं- उसी प्रकार अन्य लोकों में भी प्राणी जगत् रहता ही होगा। परमात्मा ने ब्रह्माण्ड का सृजन आत्मा की उन्नति के लिये किया है। अपने-अपने कर्मों के अनुसार परिणाम भोगने पड़ते हैं। हाँ यह हो सकता है अलग-अलग स्थानों पर प्रकृति की सभ्यता और विकृति अलग-अलग परिणाम से हों, कहीं वायु के आधिक्य से, कहीं अग्नि के आधिक्य से, कहीं जल के आधिक्य से प्रकृति में विकृति उत्पन्न होने पर उसी प्रकार की सृष्टि हुई होगी।

यही कारण है कि अंतरिक्ष मानव (एलियन) उसी वातावरण से निकल कर अपने साधन अपनाकर हमारी पृथ्वी की ओर आते हों। जिस प्रकार हमारे वैज्ञानिक पृथ्वी के वायु मण्डल से निकल कर चाँद पर वहाँ के वातावरण के अनुसार साधन ले जाकर जीवित पहुँचे थे। हमारे वैज्ञानिक अब पृथ्वी की वनस्पति वहाँ ले जाकर पृथ्वी जैसा वातावरण बनाना चाहते हैं ताकि वह स्थान रहने योग्य हो सके। भारतीय खगोल वैज्ञानिकों ने चाँद पर पानी की खोज की है। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने बृहस्पति और शनि ग्रह पर भी पानी के होने की संभावना व्यक्त कर बताया है कि इन ग्रहों में भी पानी है। मंगल पर पानी की सूखी परतें दिखी हैं। इससे भी यही सिद्ध हो रहा है अन्य ग्रह नक्षत्रों में पानी है। वैसे भी वैदिक ऋषि मुनियों ने यह बता ही दिया है कि- प्रकृतियाँ आठ हैं और उसके सोलह विकार बताये हैं- अव्यक्त, महतत्व, अहंकार, पृथ्वी, वायु, आकाश, जल और तेज इन आठ तत्वों को भी पृथ्वी बताया है। विकारों में- आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा, वाक्, हाथ, पैरगुदा, लिंग, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध- इनमें हस्त- पादादि कर्मेन्द्रियाँ और शब्द, स्पर्शादि, विषय विशेष कहलाता है तथा नेत्रादि ज्ञानेन्द्रियों को सविशेष कहते हैं। ये सब मिलकर पन्द्रह हैं और १६वां मन है। ये ही सोलह विकार कहलाते हैं। इस प्रकार प्रकृति और उसके विकार ब्रह्माण्ड के हर ग्रह नक्षत्र में होने के कारण हर स्थान पर जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज- ये चार प्रकार के प्राणी हर लोक में मिलने ही चाहिये, इस प्रकार ब्रह्माण्ड के प्राणियों के साथ-साथ सब में बुद्धिमान मनुष्य भी अवश्य होगा। रंग रूप अलग-अलग हो सकते हैं। लेकिन प्राणी जगत् लोक लोकान्तरों में है। एक दिन हमारा एलियनों से सम्पर्क अवश्य ही होगा और हमारे उनके ज्ञान से प्रीतिपूर्वक व्यवहार कर सभी का मंगल करेंगे। यही वेद कह रहा है और यह सत्य है कि ग्रह नक्षत्रों में एलियन हैं लेकिन वहाँ तक पहुँचने के लिये मन की गति के समान साधन चाहिये।

- सुखदेव व्यास
अनन्त सुन्दरम् भवन, 18, जहाजगली उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष- ९०३९१८२४८९

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १०/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १०/१७** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजयनगर (राज.), श्री रमेश आर्य; दीनानगर (पंजाब), श्री किशनराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठककर; साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द सोनी; बीकानेर (राज.), श्री तुलसीराम आर्य; बीकानेर (राज.), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री सुबोध गुप्ता; हरिद्वार (उत्तराखण्ड), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजयनगर (म.प्र.), श्री राजनारायण चौधरी; शाजापुर (म. प्र.), श्री गौरीशंकर; नारनौल (हरिद्वार)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १५ पर अवश्य पढ़ें।

राम रहीम के काले कारनामों से यह निर्विवाद सिद्ध हो गया कि साधारण जनता जनार्दन भगवान के प्रति कितनी अटूट श्रद्धा रखती है, कितनी आध्यात्मिक परायण है, कितनी अन्धश्रद्धा में मतान्ध है तथा यह तथ्य भी सिद्ध हो गया कि उसकी अन्धश्रद्धा का कोई चालाक व्यक्ति अपने स्वार्थ और अपनी ऐषणाओं की पूर्ति के लिए कितना दुरुपयोग कर सकता है तथा ऐसी भोली भाली अन्धविश्वासी जनता को किस हद तक मूर्ख बनाया जा सकता है।

राम रहीम का यह कोई पहला काण्ड नहीं है, इससे भी पहले ऐसे काण्ड हो चुके हैं जिनको सब भली भाँति जानते हैं। साधु, सन्त और संन्यास के धर्म, कर्म को इन ढोंगी बाबाओं ने निर्दयता से कुचल कर रखा।

सन्त कहे जाने वाले रामपाल का काण्ड सर्वविदित है जिसके कारण रामपाल अभी भी हिसार (हरियाणा) की जेल में सलाखों के पीछे है। रामपाल हरियाणा सरकार में एक क्लर्क के स्तर की नौकरी करता था। कबीर पंथ के ठिकानों पर उपदेश सुनता रहता था। दिमाग से बड़ा शातिर था। उसने सत्संगों में देखा कि यहाँ तो लोग बड़े भोले और साधारण बुद्धि के आते हैं इनको कोई भी बात कही जाये सबके अन्त में ये यही बोलते हैं 'सत्य वचन महाराज'। इनको बहका कर इनका गुरु बनना और अपना मठ स्थापित करके गद्दी पर बिराजमान होना बड़ा ही आसान है। पैसों की तो ये अन्ध भक्त अपने गुरु पर बारिश करते हैं। इसी विचार से इसने कबीर साहित्य को पढ़ना शुरू कर दिया जिसे समझने में कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि बड़ी साधारण और व्यवहारिक बोलचाल की भाषा के स्तर का है। इसने नौकरी छोड़ दी, छोड़ी नहीं अपितु इसे नौकरी से निकाल दिया गया। इसने छोटे-मोटे ठिकानों पर कबीर पंथ पर प्रवचन देने आरम्भ किए। आहिस्ता-आहिस्ता भक्तों की भीड़ का जमावड़ा बढ़ने लगा। अन्धे भक्तों की सहायता से इसने रोहतक जिले के डीघल गाँव के पास करौंथा गाँव हरियाणा में

भूमि लेकर अपना आश्रम बनाया और आश्रम का नाम सतलोक (सत्यलोक) रखा। जन साधारण की धार्मिक भावना का दुरुपयोग उन्हें आकर्षित करने के लिए आश्रम का यह सतलोक नाम जादुई प्रभाव करने के लिए काफी था। गरीब और साधारण तबके के लोग किसान और मजदूर विशेष रूप से अधिकतर महिलायें इसकी अन्धी भक्त बन गईं। सन्त के रूप में तो यह प्रसिद्ध हो ही गया। अपने प्रवचनों में यह अपने आपको कबीर साहब का भेजा हवादूत बतलाने लगा जो अपने भक्तों को सीधा सतलोक अर्थात् स्वर्गलोक में भगवान के दरबार में पहुँचाने की गारन्टी देने लगा। सांसारिक दुःखों और पीड़ाओं से ग्रस्त जनसाधारण को इतने सस्ते भगवान के दर्शन से बढ़कर क्या चाहिए ।

इसने कबीर साहब के बारे में अपने आपको कबीर साहब का अवतार स्थापित कर लिया और कबीर को साक्षात् भगवान सिद्ध करने लगा। इसके लिए वह वेद/उपनिषद् के इस वचन को प्रमाण के रूप में उपस्थित/प्रस्तुत करता था **'कविर्मनीषी परिभूः स्वम्भूः'** जिसकी व्याख्या में वह इस मन्त्र के प्रथम शब्द कविर्मनीषी- कविः मनीषी में आये हुए कविः (कविर्) शब्द को कबीर कहकर बोलता था और कहता था कि वेद में उस मनीषी स्वयम्भू भगवान को कबीर कहा गया है अतः कबीर साहब वेदों में वर्णित साक्षात् भगवान हैं और मैं (सन्त रामपाल) एकमात्र कबीर भगवान का अवतार हूँ। दूरदर्शन पर प्रतिदिन रात्रि के आठ बजे के समय में दिए जाने वाले सन्त रामपाल के प्रवचन इसके प्रमाण हैं कि वह

अपने विषय में व्याख्या कहकर प्रवचन करता था और अपने भक्तों को क्या-क्या प्रलोभन के सब्ज बाग दिखाकर अपने जाल में फंसाता था। इस प्रकार वह रामपाल से सन्त और सन्त से भगवान बन गया, उसका करौंथा गाँव का आश्रम सब प्रकार के भोग विलासी साधनों से सम्पन्न बन गया। विपुल सम्पत्ति के साम्राज्य का सन्त रामपाल मालिक बन गया। उसका जीवन और जीवनशैली अत्यन्त रहस्यमय बन गई। साधारण भक्तों की भीड़ उसके दर्शनों के लिए लालायित रहने लगी। इसके लिए सन्त रामपाल क्या-क्या ढोंग और पाखण्ड करता था, अपने रहस्यमय संसार के जीवन का उपभोग और आनन्द लेने के लिए क्या-क्या अनाचार और कदाचार करता होगा पाठक इसका अनुमान स्वयं लगा सकते हैं क्योंकि उसके खिलाफ कोर्ट में मामला लंबित है, अतः अधिक लिखना उचित नहीं। सन्त रामपाल अभी भी जेल में है उसे जमानत नहीं मिली है।

सन्त रामपाल को अपने ढोंग और पाखण्ड की पोल खुलने का खतरा यदि किसी से था तो वह केवल आर्य समाज से था। हरियाणा आर्य समाज का गढ़ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कई गुरुकुल हरियाणा में ही खोले थे। स्वामी ओमानन्द जी (आचार्य भगवान देव जी) के नेतृत्व में गुरुकुल झज्जर हरियाणा विख्यात है। इन अनेक गुरुकुलों के स्नातक हरियाणा में ही कार्यरत थे। रोहतक में हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य कार्यालय था जो आर्य समाज की गतिविधियों का केन्द्र था और सन्त रामपाल का करौंथा गाँव में सतलोक आश्रम रोहतक के ही पास था। सन्त रामपाल प्रतिदिन दूरदर्शन पर स्वामी दयानन्द को पानी पी पीकर कोसता था। स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश और वेद भाष्य में अपनी मूर्खता को प्रदर्शित करते हुए अनापशनाप झूठी गालियाँ निकाल कर भोले भाले संस्कृत से अनभिज्ञ भक्त श्रोताओं को बरगलाता रहता था। ऋषि दयानन्द को जी भरकर कोसता और गालियाँ देता रहता था। आर्य समाज ऐसे महामूर्ख अनपढ़ गंवार को कैसे बर्दाश्त कर सकता था। आर्य समाज ने इसे खुले शास्त्रार्थ की चुनौती दी किन्तु यह सामने नहीं आया। आर्य समाज ने इसके खिलाफ इसके

आश्रम के पास ही मोर्चा खोला, इसकी मूर्खतापूर्ण एक-एक बात का उत्तर दिया और जनता को सच्चाई से आगाह किया। परिणामस्वरूप जनता इसके विरोध में खड़ी हो गई। इसके विरोध में जबरदस्त आन्दोलन आर्य समाज के नेतृत्व में किया गया। परिणामस्वरूप करौंथा के अपने सतलोक आश्रम को छोड़कर भागना पड़ा और हिसार जिले में वर्तमान आश्रम बनाया। वहाँ पर भी इसने अपनी मूर्खतापूर्ण ढोंगभरी अनाचार और भ्रष्टाचार से पूर्ण गतिविधियाँ जारी रखीं। हरियाणा सरकार ने वहाँ इसके आश्रम पर छापा मारा

और तीन दिन तक निरन्तर संघर्ष करने के बाद अनेक लोगों के इसके शिकार होने के बाद इसके आश्रम में घुसने में पुलिस सफल हुई। आज यह सन्त रामपाल १० आपराधिक धाराओं के तहत हिसार जेल में बंद है और इसकी अभी जमानत की याचिकाएँ खारिज हो चुकी हैं। लेखक स्वयं इसके विरुद्ध आन्दोलन में सक्रिय भागीदार रहा है।

दूसरा इससे भी घिनौने दुष्कृत्यों में लिप्त आसाराम का उदाहरण है। उसके ऊपर भक्तों के द्वारा अथाह धन सम्पत्ति, विशाल भूमि का स्वामित्व, हत्यायें और बलात्कार जैसे गंभीर अपराधों से धर्म के नाम पर अपने भक्तों को रिझाता था। आज वह अनेक संगीन अपराधों के जुर्म में जोधपुर की जेल में बंद है और उसकी सभी जमानत याचिकाएँ खारिज हो चुकी हैं।

तीसरा उदाहरण अभी हाल ही में ढोंगी और अय्याश बाबा सच्चा सौदा के नाम पर अथाह सम्पत्ति स्थापित करने वाले अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार और व्यभिचार सभी प्रकार के दुष्कृत्यों में आकंठ डूबे हुए बाबा राम रहीम का है। धर्म के नाम पर सभी प्रकार के दुराचार पूर्ण तरीकों से अपने करोड़ो भक्तों की फौज खड़ा करने वाले राजनीतिक नेताओं तक को अपने पैरों की धूल चटा कर अपना भक्त बनाने वाले और सरकार से टक्कर लेने की ताकत रखने वाले अपने साम्राज्य के ताने बाने का जाल पूरे देश में बनाने वाले गुरमीत राम रहीम का देशद्रोही काण्ड अब जग जाहिर है। राम रहीम

अब २० साल की कठोर कारावास में जेल की सलाखों के पीछे दहाड़ मार-मार कर रोता हुआ सजा काट रहा है। ऐसे और भी कई ढोंगी बाबाओं की दुकानें चल रही हैं। अभी भी उनकी पोल खोलने की आवश्यकता है।

आर्य समाज का अब यह जागने का स्वर्णिम अवसर है। समूचे देश में आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुकूल अवसर है। आर्य समाज धर्म के नाम पर होने वाले सभी प्रकार के पाखण्डों आडम्बरों और ढोंग का घोर विरोधी रहा है। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने अपने कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में अन्तिम चार समुल्लास धर्म के नाम पर होने वाले सभी प्रकार के पाखण्डों, ढोंगों, अनाचार, दुराचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार और व्यभिचार के कुकृत्यों की पोल बड़े विस्तार से और साफ-साफ कठोर से कठोर शब्दों में खोली है। उन्होंने ईश्वर, धर्म और आध्यात्मिकता का वास्तविक स्वरूप मानव की जीवनशैली के सभी अंगों की विस्तार पूर्वक व्याख्या करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के प्रारम्भिक दस समुल्लासों में बतलाया है, झूठी और अन्धी जनता के सामने खुल चुकी है। अतः आर्य समाज अपने सच्चे धर्म के प्रचार को उग्र रूप से लेखों द्वारा प्रवचनों द्वारा मीडिया के साधनों द्वारा तेज करे। अब वह अवश्य सफल होगा क्योंकि देश सच्चाई जानना चाहता है। धर्म के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए देश अब बड़ी बेताबी से प्रतीक्षा कर रहा है। गाँव और देहात की बहुसंख्यक भोली भाली जनता को विशेष रूप से जागरूक करने के लिए भजनोपदेशकों, प्रचारकों को यह काम सौंपना चाहिए। शहरों में उपदेशक प्रचारक मिल ही जाते हैं अपने प्रचार के कार्य के लिए आर्य समाज को आधुनिक विधा, मीडिया तथा दूरदर्शन का उपयोग करने के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे वह अभी तक दूर है या पूर्णतः उपेक्षित है। आर्य समाज की पत्रिकाओं में तो इस विषय पर सम्पादकीय तथा लेखों की भरपूर भीड़ लग जानी चाहिए। आर्य समाज में भी कोई तर्कहीन आस्था पनपने न पाये इसके प्रति भी बड़ी सावधान और जागरूक रहने की आवश्यकता है। आर्य समाज अब इसके खिलाफ एक योजनाबद्ध अभियान छेड़े।

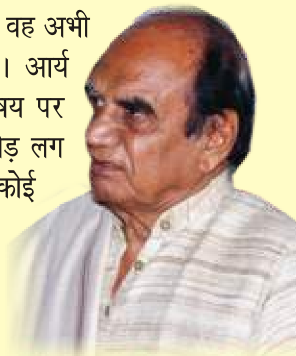

-वेद मार्तण्ड महावीर मीमांसक
ए- ३/११ पश्चिम विहार
दिल्ली- ११००६३

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १२/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	स्ति		■	२	हीं	■	३	व	
४	हा		व		■	५	र		■
६	जा		ति	■	७	का		क	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो मनुष्य परमेश्वर को न जानते, न मानते और न उसका ध्यान करते वे क्या कहलाते हैं?

२. क्या वेदों में अनेक ईश्वर हैं? इसका महर्षि दयानन्द ने क्या उत्तर दिया है?

३. जो दिव्य गुणों से युक्त हों वे क्या कहलाते हैं?

४. देवों का देव होने से परमेश्वर क्या कहलाता है?

५. रुद्र कितने हैं?

६. यज्ञ को क्या कहा गया है?

७. ईश्वर सब जगत् का क्या है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १०/१७ का सही उत्तर

१. क्रयविक्रयानुशय २. धर्म ३. अठारह
४. महापापी ५. चार ६. दण्डनीय ७. सुख

"विस्तृत नियम पृष्ठ १५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जनवरी २०१८

वन्दे मातरम्

(संस्कृत में राष्ट्रगीत के 'वन्दे' शब्द की समीक्षा)

आजकल वन्देमातरम् गीत पर बहुत विवाद चल रहा है। कुछ समुदाय इसके विरोध में हैं। उनके अनुसार इससे उनकी धार्मिक मान्यताओं से विरोध होता है। वे निराकार ईश्वर/खुदा के अतिरिक्त किसी जड़ वस्तु की/भूमि की उपासना भक्ति/इबादत नहीं करते। कुछ नागरिक निरीश्वरवादी किसी ईश्वर को नहीं मानते, न भक्ति/उपासना/इबादत करते हैं। इसी विवाद का विषय बने 'वन्दे' शब्द की हम समीक्षा कर रहे हैं।

संस्कृत में 'वन्दे' शब्द क्रियापद है, जो 'वदि अभिवादनस्तुत्योः'(=अभिवादन/प्रणाम करना एवं स्तुति, गुणगान करना) धातु से लट्लकार (वर्तमान काल) में उत्तम पुरुष के एक वचन में बनता है।

'वन्द्+शप्+लट्=वन्द्+अ+इट्=वन्दे। इस धातुरूप के इसके धात्वर्थ के अनुसार दो अर्थ हैं-

१. मैं वन्दना (=अभिवादन/प्रणाम/भक्ति/उपासना/धोक मारना) करता हूँ। यह अर्थ चेतन माता, पिता, आचार्य, गुरु आदि को अभिवादन/नमस्ते करने के लिए एवं परमेश्वर की भक्ति/उपासना/इबादत करने के लिए प्रयुक्त होता है। तथा-

२. मैं स्तुति/गुणगान/प्रशंसा/नामवरी/बढ़ाई करता हूँ। यह अर्थ चेतन एवं जड़/निर्जीव पदार्थों/वस्तुओं के प्रति होता है। क्योंकि जड़ वस्तुओं की उपासना/भक्ति/इबादत का तो औचित्य नहीं है। किन्तु प्रशंसा/गुणगान/नामवरी तो चेतन के साथ-साथ जड़ वस्तुओं की भी हो सकती है। जैसे प्रत्येक दुकानदार अपनी बेचने की वस्तुओं की प्रशंसा/गुणगान/बड़ाई करता है। फल विक्रेता कहता है- ये फल ताजे हैं, मीठे हैं आदि। शाक विक्रेता कहता है- ये तरकारी ताजी है, बहुत अच्छी है, सस्ती है आदि। मूंगफली विक्रेता जोर-जोर से बोलता है- जाड़े की मेवा मूंगफली, करारी भुनी मूंगफली आदि। टी.वी., रेडियो, अखबारों में दिनरात लोग/कम्पनियाँ अपने उत्पादों की जोर शोर से वन्दना/प्रशंसा/स्तुति/गुणगान/बड़ाई करते हैं, जिससे उनका माल अधिक बिकता है। अर्थात् प्रत्येक माल विक्रेता अपनी वस्तुओं की वन्दना/स्तुति/प्रशंसा/बड़ाई/नामवरी करता है। यदि वह वन्दना/प्रशंसा/बड़ाई/गुणगान न करे तो उसका माल धरा रह जायेगा।

यदि कोई विक्रेता कहे कि मैं इन वस्तुओं की स्तुति/प्रशंसा/गुणगान नहीं करूँगा, तुम्हें चीज लेनी है तो ले लो नहीं तो आगे बढ़ो, तो दुकान नहीं चल सकती। मैंने प्रत्येक दुकानदार को अपने माल की वन्दना/प्रशंसा/स्तुति/बड़ाई करते देखा है; चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, सिख हो, नास्तिक हो, स्त्री हो या पुरुष हो।

संस्कृत के भारतीय राष्ट्रगीत में भी मातृभूमि की स्तुति/प्रशंसा ही की गई है-

वन्दे मातरम्, सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलां मातरम्, वन्दे मातरम्।।
शुभ्रज्योत्स्नां पुलकित-यामिनीम्, फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्, सुखदां वरदां मातरम्।
वन्दे मातरम्.........।

अर्थात् मैं (पृथ्वीपुत्र) अपनी मातृभूमि (जन्मभूमि) की वन्दना/गुणगान/प्रशंसा/नामवरी करता हूँ, जो सुन्दर मीठे जलवाली, मीठे, रसीले फल-फूल वाली ठण्डी सुगन्धित वायुवाली, हरी-भरी फसलों में सजी हुई, चमकीले प्रकाशवाली, शान्तिप्रद रात्रियों वाली है, यह फलते फूलते वर्षों से सुशोभित है, यहाँ के वासी हँसते खेलते मधुरभाषी हैं। यह मेरी मातृभूमि सुख देनी वाली और वरदान देने वाली (लक्ष्य को पाने की शक्ति देने वाली) है। ऐसी अद्भुत मातृभूमि की मैं वन्दना/प्रशंसा/गुणगान/नामवरी करता हूँ।

इस गीत में गुणगान/प्रशंसा करने वाले ही शब्द हैं। धोक मारने/उपासना/इबादत करने को नहीं कहा गया। जिस देश की मिट्टी से हम पले बढ़े हैं, उसकी प्रशंसा करना/गुणगान करना तो हमारा स्वाभाविक धर्म है, अन्यथा कृतघ्नता, ऐहसान फरामोशी का पाप लगेगा।

मैं यह व्याख्या अपनी मनमानी खींचातानी से नहीं कर रहा हूँ अपितु हजारों लाखों वर्षों से उक्त दोनों अर्थों में यह धातु है जिससे 'वन्दना' (अभिवादन/प्रणाम और स्तुति/प्रशंसा) शब्द बनता है। इसका जो अर्थ हजारों वर्षों पूर्व था, वही अब है और ये ही दोनों अर्थ वर्षों के बाद भी रहेंगे।

'वन्देमातरम्' पर आपत्ति का कारण मैं समझता हूँ कि वे 'वन्दे' शब्द का एकमात्र अर्थ अभिवादन करना/प्रणाम करना/इबादत करना ही समझते हैं, जो कि इस शब्द के प्रति घोर अन्याय है और ५० प्रतिशत तक झूठ है। इस वन्दे शब्द का अर्थ अभिवादन भी है किन्तु अभिवादन ही नहीं अपितु स्तुति करना (प्रशंसा करना, गुणगान करना) भी है। वही दूसरा अर्थ इस गीत में लेना अभीष्ट है।

अतः मेरा निवेदन है कि सभी लोग अपने देश की प्रशंसा करने हेतु इस गीत को मातृभूमि की स्तुति/प्रशंसा/गुणगान/नामवरी करने वाला मानकर निःसंकोच प्रसन्नता से गावें।

अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में तो एक शब्द के अलग अलग अर्थ हो सकते हैं; जैसे मराठी भाषा में 'ताई' का अर्थ है- दीदी (बड़ी बहिन)। किन्तु हिन्दी भाषा में ताई का अर्थ ताऊ की पत्नी/माँ की जेठानी होता है। अतः यदि आप उत्तर प्रदेश में 'दीदी' को 'ताई' कहकर बुलाएँगे तो नाराज होगी थप्पड़ देगी या गाली देगी। किन्तु यदि महाराष्ट्र में दीदी को 'ताई' कहकर बुलायेंगे तो वह प्रसन्नता से उत्तर देगी।

किन्तु संस्कृत भाषा में ऐसी भ्रान्ति नहीं होती। स्थिति के अनुसार उसका अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

यदि आप इस राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकृत वन्दे मातरम् के पदसमूह को देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि गीत में भारत का नाम नहीं है अतः इसे पाकिस्तान, चीन, जापान, अमेरिका के, यूरोप के, अफ्रीका के आस्ट्रेलिया आदि सभी देश गा सकते हैं। अर्थात् यह किसी एक देश (भारत) का ही गीत नहीं अपितु पृथिवीवासी प्रत्येक देशवाले को गाने योग्य है। मेरा मान्य प्रधानमंत्री मोदी जी से निवेदन है कि इस वन्दे मातरम् गीत को संयुक्त राष्ट्र गीत की मान्यता दिलाने के लिए प्रयत्न करें, क्योंकि हम सब पृथिवीवासी एक कुटुम्ब हैं। (वसुधैव कुटुम्बकम्)। यदि आगे कभी हमें मंगलग्रहवासियों या बृहस्पति ग्रहवासियों के साथ मिलने का अवसर मिले तो हम गर्व से कह सकें कि हम ऐसी पृथिवी (ग्रह) के वासी हैं, जैसी इस गीत में बताई गई है।

इस गीत के शीर्षक के मातरम् शब्द पर भी विवाद है कि हम भूमि को मातरम् क्यों कहें? सो इसका अर्थ समझें कि यह शब्द वाचक लुप्तोपमालंकार में है अर्थात् माता के समान सुख देने वाली/जीवन देने वाली भूमि मातृभूमि।

इसी सादृश्य से बहुत से शब्द बोले जाते हैं जैसे नरशार्दूलः रामसिंह, रणसिंह, धर्मसिंह, गोविन्दसिंह आदि। सिख बन्धुओं के नाम अधिकतर सिंह पर होते हैं। इन सबका अर्थ है, सिंह/शेर के समान पराक्रमी-उत्साही। न कि बड़े-बड़े दाँतों और पंजों वाला जानवर।

आशा है कि सभी मत के लोग सभी देशों के मनुष्य इस 'वन्दे मातरम्' गीत को खुशी-खुशी गाकर स्वयं भी प्रफुल्लित होंगे।

- आचार्य आनन्द प्रकाश

आर्य शोध संस्थान, आलियाबाद म.शमीरपेट

जि. मेडवल ५००१०१ (तेलंगाना)

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द का हत्यारा गाँधीजी को प्यारा

रचनाकार- कवि रमेश

इस बात से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता कि सबसे अधिक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आर्य समाज के राष्ट्रवादी चिन्तन की तप्त विचारधारा से तपकर सोने की भाँति चमके। रानी लक्ष्मीबाई, तिलक, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, अजित सिंह, भगवती चरण वोरा , सुखदेव, राजगुरु, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे अनेक आत्म बलिदानियों के साथ-साथ स्वराज, स्वदेशी, विदेशी वस्तुओं के वहिष्कार, स्त्री शिक्षा, दलितोद्धार और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल समर्थक तथा अंग्रेजों के छक्के छुड़ा देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द का स्वतन्त्रता संग्राम का जज्बा भी उस आत्म बलिदान की गाथा है जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

लेकिन इतिहासकार डॉ. मंगाराम की पुस्तक 'क्या गाँधी महात्मा थे?' के तथ्यों के प्रकाश में देखें तो गाँधीजी को आर्य समाजियों से बेहद चिढ़ थी। डॉक्टर साहब के अनुसार- 'गाँधीजी ने आर्य समाज, सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द की विभिन्न प्रकार से आलोचना की। गाँधीजी ने कहा- 'स्वामी श्रद्धानन्द पर भी लोग विश्वास नहीं करते हैं। मैं जानता हूँ कि उनकी तकरीरें ऐसी होती हैं जिनसे कई बार बहुतों को गुस्सा आता है। दयानन्द सरस्वती को मैं बड़े आदर की दृष्टि से देखता हूँ, पर उन्होंने अपने हिन्दू-धर्म को संकुचित और तंग बना दिया है। आर्य समाज की बाइबिल 'सत्यार्थ प्रकाश' को मैंने दो बार पढ़ा है। यह निराशा और मायूसी प्रदान करने वाली किताब है।'

डॉ. मंगा राम ने पुस्तक में आगे लिखा है- 'स्वामी श्रद्धानन्द को २३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद नामक एक युवक ने उस समय गोली से मार दिया, जब वे रुग्ण शैय्या पर पड़े हुए थे। गाँधीजी ने स्वामीजी के हत्यारे को 'प्यारे भाई रशीद' कहकर सम्बोधित किया। उसके द्वारा की गयी जघन्य हत्या की निन्दा करने के स्थान पर उस हत्यारे के प्रति बरती गयी उदारता क्या गाँधी जी की नैतिक गिरावट को प्रकट नहीं करती? भले ही ब्रिटिश सरकार ने अब्दुल रशीद को फाँसी पर लटका दिया किन्तु उसको बचाने का प्रत्यत्न करने वाले वकील आसफअली गाँधीजी के भक्त और कांग्रेस के नेता थे। स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या के समय गाँधीजी कांग्रेस के १९२६ के गोहाटी अधिवेशन में भाग ले रहे थे। जब उन्हें स्वामीजी की हत्या का समाचार मिला तो गाँधीजी ने कहा- 'ऐसा तो होना ही था। अब आप शायद समझ गये होंगे कि किस कारण मैंने अब्दुल रशीद को भाई कहा है और मैं पुनः उसे भाई कहता हूँ। मैं तो उसे स्वामीजी का हत्या का दोषी नहीं मानता। वास्तव में दोषी तो वे हैं जिन्होंने एक-दूसरे के विरुद्ध घृणा फैलायी।'

स्वामी श्रद्धानन्द के अतिरिक्त प्रख्यात आर्य उपदेशक पं. लेखराम, दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता लाला नानक चंद, महाशय राजपाल, सिन्ध के आर्य नेता नाथूरमल शर्मा आदि भी कट्टरपंथियों द्वारा मारे गये किन्तु गाँधीजी ने इन आर्य विद्वानों और नेताओं की हत्या की निंदा में कभी भी कोई शब्द व्यक्त नहीं किया। जिस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जैसे मूर्धन्य नेता की हत्या किये जाने पर गाँधीजी ने उनके हत्यारे अब्दुल रशीद की आलोचना नहीं की, उसी प्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी की हत्या किये जाने पर भी उन्होंने हत्यारों की निंदा नहीं की।

कुल मिलाकर डॉ. मंगा राम अपनी पुस्तक 'क्या गाँधी महात्मा थे?' के माध्यम से अंहिसा के पुजारी महात्मा गाँधी की हिंसा को बल प्रदान करने वाली इस सोच के पीछे यह तर्क देते हैं कि- 'गाँधीजी समझते थे कि मुस्लिम हत्यारों की निंदा करने पर उनकी वांछित हिन्दू-मुस्लिम एकता सम्भव नहीं हो पायेगी तथा उन्हें साम्प्रदायिक कहकर बदनाम किया जायेगा।

- १५/१०९ ईसानगर,
निकट थाना सासनी गेट, अलीगढ़
चलभाष- ०९६३४५५१६३०

जब शिक्षक ही फर्जी हों

भारतीय संस्कृति में शिक्षक को मूर्धस्थानीय माना गया है। **'मातमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद'** कहकर माता पिता के पश्चात् जीवन निर्माण का दायित्व आचार्य अथवा शिक्षक पर डाला गया है। 'अन्तेवासी' शब्द से यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार माता अपने गर्भ में संतान का निर्माण करती है उसी प्रकार आचार्य भी शिष्य का निर्माण करता है। यहाँ तक कि गुरु को परमेश्वर से भी ऊपर का स्थान दिया गया है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अथवा-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

{यद्यपि यह दृष्टिकोण सही नहीं है।}

गुरु केवल रोजगार देने वाली शिक्षा का प्रदाता ही नहीं विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का संस्थापक भी है। परन्तु अगर शिक्षक स्वयं फर्जीवाड़े व धोखाधड़ी में लिप्त हो तो उससे क्या आशा की जा सकती है? दुर्भाग्य से आज ऐसा ही हो रहा है, जिसके कारण नयी पीढी के नैतिक उत्थान की आशाएँ धूमिल हो रहीं हैं। अतः अत्यन्त वेदना के साथ यह सब लिखना पड़ रहा है। देश भर में फर्जी डिग्रियों के आधार पर नौकरी कर रहे लोगों के मामले भारी संख्या में सामने आ रहे हैं। मध्यप्रदेश का व्यापमं घोटाला कौन भूला है? अब शिक्षकों द्वारा भी फर्जी डिग्री जुटाने के मामले सामने आ रहे हैं, तो याद आ रहा है कि किसी समय में कुछ हजार रुपये देकर पीएच.डी डिग्री घर बैठे प्राप्त करने की जो बात किसी ने हमें कही थी वह चंडूखाने की गप्प नहीं थी। अभी गत एक-दो वर्षों में उत्तराखण्ड में ऐसे मामलों के उजागर होने में पर्याप्त तेजी आयी है।

एक समाचार के अनुसार उत्तराखण्ड के सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों में बड़ी संख्या में ऐसे शिक्षक अध्यापन का कार्य कर रहे हैं, जिनके शैक्षिक प्रमाणपत्र या तो पूरी तरह फर्जी हैं अथवा उत्तराखण्ड में मान्य नहीं हैं। हाल ही में फर्जी शैक्षणिक दस्तावेजों के आधार पर नौकरी कर रहे ४१ अध्यापक पकड़े गए थे।

गत वर्ष एक आरटीआई एक्टिविस्ट ने शिक्षा विभाग को २१७ अध्यापकों के नामों की सूची सौंपते हुए इनके शैक्षिक प्रमाणपत्रों की जाँच की माँग की है। अब तक सामने आए मामलों में आरोपी अध्यापकों ने उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान और बिहार आदि राज्यों से बनवाए गए फर्जी प्रमाण पत्र हासिल किए थे। कई ऐसे अध्यापक भी हैं, जो भारतीय शिक्षा परिषद्, लखनऊ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, महिला ग्राम विद्यापीठ प्रयाग (उ.प्र.), जैसे कई गैरमान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थानों की विशारद अथवा ऐसी ही डिग्री पर नौकरी कर रहे हैं।

फर्जी दस्तावेजों पर नौकरी करने के आरोप में अब तक पकड़े गए कुछ अध्यापक तो पिछले १६ साल से बच्चों को पढ़ा रहे थे। हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जिले की जाँच में चिड़ियापुर जिला हरिद्वार के छिद्दू सिंह के इक्का दुक्का नहीं बल्कि समस्त शैक्षिक प्रमाणपत्र फर्जी मिले हैं। एस आई टी जाँच कर रही है। एक समाचार पत्र में छपे अनुमान के अनुसार करीब ५००० शिक्षक फर्जी डिग्रियों से नौकरी कर रहे हैं।

खबर यह भी है कि मामलों को दबाने की कोशिश भी जारी है जो कि हमारी विशेषता बन गयी है। यह इस बात से स्पष्ट है कि इतने बड़े पैमाने पर फर्जीवाड़े का खुलासा करने वाले

डीईओ बेसिक रामेंद्र कुशवाहा को अचानक रिलीव कर दिया गया। एक और दुर्भाग्यजनक बात सामने आयी है कि शैक्षणिक डिग्रियों के फर्जीवाड़े में निचले स्तर के अध्यापक ही नहीं हैं, विश्वविद्यालयों के कुलपति भी इस रोग से नहीं बचे हैं।

एक समाचार पत्र के अनुसार उत्तराखंड उच्च न्यायालय में एक प्रार्थनापत्र 'उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय' हरिद्वार के कुलपति की डिग्रियों की वैधता को चुनौती देते हुए दाखिल किया गया है जिसमें इनकी डिग्रियों को इस कारण फर्जी बताया गया है कि उन्होंने १९७५ में ११ वर्ष की अवस्था में हाई स्कूल कैसे पास कर लिया और सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से १९७७ में १२वीं कक्षा कैसे पास कर ली? प्रथमदृष्टया तो आरोप में कुछ दम लगता है। उस काल में औसतन ४ वर्ष की आयु में कोई बालक विद्यालय की प्रथम कक्षा में बैठा होगा, इस हिसाब से हाई स्कूल करते समय उसकी आयु कम से कम १४ वर्ष तो होगी। आज के काल में ढाई वर्ष में बच्चे को विद्यालय भेज देते हैं पर अब उसे प्रथम कक्षा तक पहुँचने में ही ४ वर्ष लग जाते हैं और इस प्रकार वह भी न्यूनतम १४ वर्ष की अवस्था में १० वीं पास करेगा। मामला अब उच्च न्यायालय में है। परन्तु यदि यह सत्य है तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा, क्योंकि कुलपति शिक्षा-मंदिर का सबसे बड़ा शिखर है और अगर यहाँ भी नैतिकता शून्य है तो आगे क्या आशा की जा सकती है।

इस विषय पर छानबीन करते हुए एक ऐसा ही समाचार और ज्ञात हुआ जिसमें दुर्भाग्य से वह विश्वविद्यालय इन्वाल्व है जिसे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का स्वप्न कहा जा सकता है। १०० वर्ष से आर्य समाज जिसे अपनी शिक्षण संस्थाओं के ध्वज के रूप में देखता रहा है। जी हाँ हम गुरुकुल कांगड़ी की ही बात कर रहे हैं। अभी अधिक समय नहीं हुआ जब गुरुकुल के कर्त्ताधर्ताओं के द्वारा गुरुकुल को सरकार के सौंपने के निर्णय से आर्य जगत् अचंभित और ठगा सा रह गया था। अब इसके कुलपति पर फर्जी डिग्रियों का आरोप लगा है। ४२० सहित कई धाराओं में इस आशय की एक एफ.आई.आर दर्ज की गयी है। आरोप उक्त प्रकार का ही है कि एक ११ वर्ष का विद्यार्थी हायर सेकंडरी (११वीं) १९६२ में कैसे पास कर सकता है। कैसे १९६८ में स्थापित एक परीक्षा पीठ १९६२ में परीक्षा ले सकती है। कैसे एक विश्वविद्यालय की ऐसी डिग्री इण्टर के समकक्ष मानी गयी जिसका स्वयं कथन है कि वह डिग्री इण्टर बोर्ड के समकक्ष नहीं है। प्रश्न यह भी है कि आचार्य की डिग्री इण्टर के बराबर है अथवा एम.ए. के। एसपी सिटी नवनीत सिंह भुल्लर के अनुसार दस्तावेजों का परीक्षण किया गया था। मुकम्मल तरीके से जाँच के लिए एफ.आई.आर दर्ज करने के निर्देश दिए गए। जाँच के बाद ही स्थिति साफ हो पाएगी।

वहीं उक्त मामले में ही एक याचिका उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति यू.सी. ध्यानी एवं न्यायमूर्ति लोकपाल सिंह की अदालत में लम्बित है। मान्य पीठ ने यू.जी.सी. को भी इस मामले में अपना उत्तर देने हेतु निर्देशित कर दिया है। वहीं कुलपति महोदय ने स्वहस्ताक्षरित सभी डिग्रियाँ न्यायालय के निर्देशानुसार सभी पक्षों को दे दी हैं। कुलपति महोदय अपनी डिग्रियों की वैधता को लाकर पूर्ण आश्वस्त हैं, उनके अनुसार वे जाँच एजेंसियों को पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे हैं। काश ऐसा ही हो। क्योंकि इस मामले में आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं तथा उनके कर्त्ताधर्ताओं पर भी आँच आती है जो हमारे निकट ही नहीं सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए दुःख और शर्म का विषय होगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर हम यह आशा कर सकते हैं कि आर्य शिक्षण संस्थाओं पर छाये ये बादल शीघ्र छंट जायँ और हमारा वही तेजस्वी स्वरूप देश के समक्ष निखर कर आये।

- अशोक आर्य
उदयपुर (राज.)
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

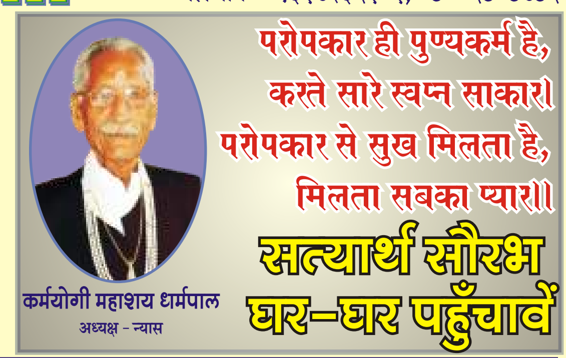

मधुमेह की शुरूआत में

जब डॉक्टर आपको कहे कि आपको मधुमेह की शुरूआत हो गई है तो उसी क्षण से आपको सतर्क हो जाना चाहिए और जीवनशैली में आवश्यक सकारात्मक बदलाव दृढ़ निश्चय के साथ करते हुए निम्न सात उपायों का कम से कम अवश्य अनुपालन करना चाहिए ताकि मधुमेह आपसे दूर रहे। चिकित्सकों की भाषा में इन उपायों के अवलम्बन से प्री डायबिटीज स्टेज को डायबिटीज स्टेज में प्रवेश करने से आप रोक सकते हैं:-

१. ज्यादा चलें- अभी तक आप सुस्ती के साथ जीवन जी रहे हों तो उसमें चुस्ती भरने का प्रयास करें। इसके लिए पैदल चलने का क्रम ज्यादा से ज्यादा रखें। अगर अभी आप व्यायाम नहीं कर रहे हैं तो सुनिश्चित करें कि एक सप्ताह में कम से कम पाँच दिन तीस मिनिट प्रतिदिन आप अवश्य ही व्यायाम करें। डॉक्टर गेल के अनुसार शारीरिक गतिविधियाँ रक्त में शर्करा के स्तर को घटाने के लिए अत्यावश्यक हैं।

२. वजन कम करें- अगर आप ओवरवेट हैं तो आप अगले कुछ महीनों में कम से पाँच से सात प्रतिशत वजन कम करने का लक्ष्य रखें और इसके लिए व्यायाम आसन इत्यादि के साथ अपने भोजन मैन्यू को भी नियंत्रित करें। अगर कोई प्री डायबिटिक मरीज ऐसा करता है तो उसे डायबिटीज होने की संभावना ५८ फीसदी कम हो जाती है।

३. डॉक्टर से नियमित सलाह लें- डॉक्टर जिरेटी का सुझाव है कि आपको तीन से छह माह में एक बार कम से कम अपने डॉक्टर से मिलना चाहिए ताकि वह आपकी रिपोर्ट्स इत्यादि को देखकर के आपको समुचित सलाह दे सके।

४. अच्छा खायें- आपके भोजन की योजना इस प्रकार तैयार करें कि उसमें स्टार्च और ज्यादा कैलोरी के पदार्थ कम से कम हों। अतः कहा जा सकता है कि हरी सब्जियाँ, गाजर के समकक्ष फलादि ज्यादा से ज्यादा लें। जिन खाद्य पदार्थों में फायबर ज्यादा होता है उन्हें अपने भोजन में शामिल करें। दिन में एक से तीन बार फलों को सेवन करें। चोकर युक्त आटे का प्रयोग करें। सफेद चावल के स्थान पर भूरा चावल ज्यादा उपयोगी है।
पूर्ण वसायुक्त दूध के स्थान पर स्किम्ड दूध पीयें। फास्ट फूड जैसे पास्ता इत्यादि और तले भुने खाने को यथासंभव नमस्ते कहें।

५. अच्छी नींद लें- जो लोग पर्याप्त मात्रा में नींद नहीं लेते हैं वे डायबिटीज को आमंत्रित करते हैं क्योंकि शरीर में बनने वाली इंसुलिन का प्रभावशाली तरीके से कम सोने वालों के शरीर के द्वारा उपयोग किया जाता है। अतः लगभग सात घंटे की नींद अवश्य लें।

६. मिले जुलें- ऐसे लोगों से मेलजोल बढ़ायें जिनके जीवन में भी इसी प्रकार का लक्ष्य है और वे सकारात्मक सोच के साथ दृढ़ निश्चय के साथ उक्त कामों को करने में लगे हुए हैं। ऐसा होने से आपको सतत् प्रेरणा मिलती रहती है।

७. फैसला लें और उस पर दृढ़ रहें- व्यक्ति हमेशा चीजों को प्रतिदिन सर्वश्रेष्ठ तरीके से नहीं कर पाता यह सही है परन्तु सदैव अपने मन में दृढ़ निश्चय करते रहें कि अधिकतर समय उन श्रेष्ठ चीजों को आप सर्वश्रेष्ठ तरीके से करते रहेंगे। आपकी दिनचर्या में हमेशा 'ओटो सजेशन' का क्रम रखें और अपने आप से कहते रहें कि हाँ मैं कर लूँगा, मैं निश्चित रूप से करूँगा और मैं मधुमेह पर विजय प्राप्त करूँगा। ये सारी चीजें मिलकर के डायबिटीज को दूर रखने में सहायता करेंगी।

कथा सरित

दो आने का साबुन

स्वर साम्राज्ञी लता दीदी से भारत में ही नहीं, विश्व में ऐसा कौन शख्स होगा जो परिचित नहीं होगा। लता जी के बचपन का एक प्रसंग हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि माता-पिता यदि बच्चों में बचपन से ही सुसंस्कार अध्यारोपित करने का प्रयास करें तो कोई कारण नहीं कि सुसंस्कारित सन्तानों का निर्माण न हो। लता जी जब छोटी थीं तो एक बार उनकी माँ ने पड़ौस के किराने की दुकान से साबुन की बट्टी मँगवाई उस समय में दो आने में साबुन आता था। परन्तु घर की सेविका को दुकानदार ने यह कहकर लौटा दिया कि दो आने का सिक्का जो वह दे रही थी वह खोटा सिक्का था। लता जी यह बात सुन रही थीं, अचानक वे उस सिक्के को लेकर के दुकान की तरफ दौड़ पड़ीं और दुकानदार से साबुन माँगा। दुकानदार जब साबुन दे रहा था तो उसके गल्ले में लता जी ने चुपके से दो आने का वह खोटा सिक्का डाल दिया और दुकानदार से बोलीं कि 'काका साबुन की कीमत मैंने गल्ले में डाल दी है।' आखिर लता जी दीनानाथ मंगेशकर की बेटी थीं जिनका अपना एक नाम था। अतः दुकानदार को एक क्षण के लिए भी अविश्वास नहीं हुआ और इस प्रकार लता जी साबुन लेकर खुशी खुशी घर लौटीं और बोलीं कि देखो मैं साबुन ले आई। संयोग से दीनानाथ मंगेशकर भी उस समय घर पर थे उन्होंने पूछा कि जब दो आने का सिक्का खोटा था तो तुम साबुन कैसे लेकर के आईं? लता जी इस पर चुप हो गईं। परन्तु दीनानाथ जी ने और लता जी की माता जी ने काफी दबाव डाला तो उन्होंने सारी घटना यथावत वर्णित की। इस पर दीनानाथ जी ने कहा कि तुमने यह अत्यन्त गलत कार्य किया है। तुम दो आने लेकर के दुकानदार के पास जाओ और उससे माफी माँगते हुए दो आने उसे दे दो। लता जी को बड़ी शर्म आ रही थी परन्तु माता पिता के दबाव में उनकी एक न चली और वे जाकर माफी माँगकर के उस दुकानदार को पैसे देकर आईं। यह घटना बचपन से बड़े होने तक भी उनके दिमाग पर छाई रही और सत्य के प्रति उनकी आस्था को दृढ़ करती रही।

बालकों का निर्माण बचपन से ही प्रारम्भ हो जाता है। उस समय में जो संस्कार उनके कोमल मन पर डाल दिए जाते हैं वे स्थायी हो जाते हैं। इस मामले में जो माता पिता प्रमाद करते हैं, वे बच्चों के साथ न्याय नहीं करते हैं। अतः सदैव बच्चों में सुसंस्कारों की स्थापना के लिए प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील रहना चाहिए।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य

ओजस्वी एवं क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता आचार्य ज्ञानेश्वर जी का निधन

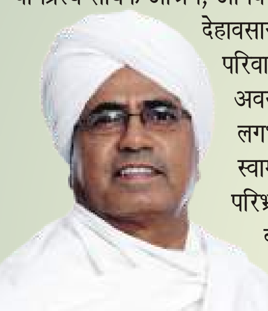

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात के अधिष्ठाता, आचार्य ज्ञानेश्वर जी का १४ नवम्बर २०१७ रात्रि करीब १.०० बजे हृदयाघात से देहावसान हो गया। यह निःसन्देह आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। आचार्य जी का जन्म बीकानेर के प्रतिष्ठित स्वर्णकार परिवार में हुआ। एम.ए. प्रथम वर्ष का अध्ययन करते हुए वे आर्य समाज के संपर्क में आये। और लगभग २५ वर्ष की अवस्था में गृह त्याग करके वे पूज्य स्वामी सत्यपति जी के साथ हो लिए। तदुपरांत आर्ष गुरुकुल कालवा में उन्होंने लगभग साढ़े छह वर्ष तक व्याकरण-महाभाष्य का अध्ययन किया। इसके बाद वे प्रो.रामप्रसाद जी वेदालंकार से निरुक्त, स्वामी दिव्यानन्द जी से काव्यालंकार व छन्द शास्त्र पढ़ते रहे। दर्शनों की पढ़ाई का क्रम स्वामी सत्यपति जी के साथ परिभ्रमण करते हुए जारी रहा। १९८६ में वे आर्यवन, रोजड़, गुजरात में अढ़ाई वर्षीय शिविर में सहभागी बने। इसके बाद पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने दर्शन योग महाविद्यालय के नाम से आगे इस कार्य को चलाने का दायित्व उन्हें तथा स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक को सौंपा। इस महाविद्यालय से ६० से भी अधिक आदर्श आचरणयुक्त युवा दार्शनिक विद्वान् तैयार हुए। इनमें से तेरह संन्यासी भी आर्य जगत् को प्राप्त हुए। आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने देश विदेश में सैंकड़ों क्रियात्मक ध्यान योग प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से हजारों साधकों का अध्यात्म मार्ग प्रशस्त किया। लगभग ३० से भी अधिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से हजारों याज्ञिक परिवारों का निर्माण किया। किशोर चरित्र निर्माण शिविर एवं युवक व युवतियों के लिए व्यक्तित्व विकास शिविरों से युवाशक्ति को वैदिक धर्म से सम्बद्ध किया।

उन्होंने २८ बार विदेश यात्रा करके वैदिक धर्म का नाद गुंजायमान किया। आपने योग एवं अध्यात्म से सम्बन्धित साहित्य, ग्रन्थ, पुस्तक पुस्तिकाएँ, चार्ट, कलैण्डर, फोल्डर, पत्रक आदि लाखों की संख्या में प्रकाशित करवाकर देश विदेश के हजारों घरों में निःशुल्क वितरित कराए।

आज अकस्मात वे हमारे मध्य में नहीं रहे। परन्तु उनके तपस्वी, कर्मठ, परोपकारमय जीवन व कार्यों की सुगन्ध प्रसरित हो रही है जो हजारों हजारों महानुभावों की प्रेरणापुंज बनकर उनका मार्गदर्शन करती रहेगी।

हम न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए परमपिता परमात्मा के श्रीचरणों में यही विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- अशोक आर्य
कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान

संसार में कुल तीन पदार्थ नित्य हैं। प्रकृति, जीव व ईश्वर। यह वैदिक मान्यता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थरत्न 'सत्यार्थ प्रकाश' में इन तीनों में से सर्वाधिक 'ईश्वर' विषय का व्याख्यान किया है। ग्रन्थ के कुल १४ समुल्लासों में से २ समुल्लासों (प्रथम व सप्तम समुल्लास) में ईश्वर की सिद्धि, ईश्वर के नाम, काम, ईश्वर के धाम व ईश्वर के स्वरूप आदि के विषय में अत्यन्त उपयोगी व गहन-गम्भीर सत्य उद्घाटित किए हैं। ये सत्य न उनके स्वनिर्मित हैं, न ही किन्हीं अनाप्त और अनार्ष पुरुषों के ग्रन्थों से लिए गये हैं। ये सभी सत्य स्थापनाएँ वेद व आर्ष ग्रन्थों पर आधारित हैं।

जब महर्षि दयानन्द कार्यक्षेत्र में अवतरित हुए, उस समय की परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि ईश्वर का सही स्वरुप प्रायः लुप्त व गुप्त हो चुका था। जब वेद, जो कि ईश्वर की अपनी वाणी या कहें अपना दिया ज्ञान है, वही लुप्त था तो उसके अभाव में कोई कुछ भी कह दे या लिख दे, उसकी परीक्षा करना ही असम्भव था।

इन्हीं परिस्थितियों में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के बारे में अनेक स्वयंभू आचार्यों द्वारा नाना प्रकार की अवैदिक मान्यताओं को प्रचलित कर दिया गया। निर्गुण व सगुण के मर्म को न जानकर, यह माना जाने लगा कि ईश्वर निराकार भी है और साकार भी। 'अवतारवाद' व 'अशुभ कर्मों के फल से उन्मोचन' की अवैदिक मान्यता उसी काल में विकसित हुई। ऐसे में महर्षिवर देव दयानन्द ने ईश्वर के वेदोक्त गुण-कर्म-स्वभाव का निरूपण अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में किया। महर्षि द्वारा उद्घाटित इन सत्यों की विश्वसनीयता का आधार यह भी है कि महर्षि ने अपनी योग साधना से स्वयं अनुभव करके, परख के इनका उद्घाटन किया। अर्थात् पूर्व ऋषियों व वेदों द्वारा प्रतिपादित ईश्वर के स्वरूप का वर्णन मात्र ही इनकी विशेषता नहीं है, अपितु अनुभवजन्य तथ्यों-सत्यों का उद्घाटन भी इनकी विशेषता है। ईश्वर सम्बन्धी ये मान्यताएँ तर्क पर आधारित और बुद्धिगम्य हैं। महर्षि के अनुसार ईश्वर कोई शरीरधारी व्यक्ति न होकर एक निराकार चेतन शक्ति है। इस आधारभूत सिद्धान्त को स्वीकार कर लेने के पश्चात् ही उसके अस्तित्व, स्वरूप और कार्यों आदि के विषय में सभी प्रकार की शंकाओं का समाधान किया जा सकता है।

सप्तम समुल्लास के प्रारम्भ में ही महर्षिवर देव दयानन्द ने कुछ चयनित वेद मंत्रों को प्रस्तुत किया है। जो ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के बारे में पर्याप्त विवरण प्रस्तुत करते हैं। ऋषि प्रथम मंत्र में ईश्वर को जानने की प्रेरणा दे, आगे के ६ मंत्रों में ईश्वर की महत्ता व स्वरूप सम्बन्धी कतिपय तथ्यों का निरूपण करते हैं। पाठकों के लाभार्थ, इन पवित्र ऋचाओं में उपस्थित सत्य, जिसका उद्घाटन युगों-युगों के पश्चात् महर्षि जी ने किया, का सार संक्षेप हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

१. प्रकृति से पृथिवी पर्यन्त जो कुछ भी चर-अचर वस्तु है वह ईश्वर से आच्छादित है। अर्थात् वह सर्वव्यापक है।

२. वह कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता।

३. वह प्रकृति को अपने गर्भ में धारण करने वाला हिरण्यगर्भ है।

४. वह परम ब्रह्मज्ञान (वेद) और इस महान् जगत् को उत्पन्न करता है।

५. वह सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता परमेश्वर एक ही है।

६. वह अखिल ऐश्वर्यवान है, कभी पराजित नहीं होता।

७. यज्ञ, दान व सत्संग करने वालों को वह सन्मार्ग में प्रवृत्त करता है।

८. वह अयज्ञशील, अदानी जनों को दण्डित करता है।

९. समस्त धन वैभव किसी अन्य का नहीं परमेश्वर का है। वह अनेकों जीवगणों की तृप्ति के लिए लौकिक धनों को संरक्षित रखता है। वही विज्ञानादि धन का प्रदाता है।

१०. वह दानशील, परोपकारी व्यक्तियों को समस्त ऐश्वर्य व मोक्ष सुख प्रदान करता है।

११. वह मुक्तों के नितान्त वास स्थान मोक्ष का पुरातन स्वामी है।

१२. उसकी मित्रता प्राप्त होने पर कोई कभी हिंसित नहीं हो सकता अर्थात् दुःखी नहीं हो सकता।

– अशोक आर्य

त्रैतवाद-

त्री रोचना दिव्या धारयन्त हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः।
अस्वप्नजो अनिमिषा अदब्धा उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय॥ - ऋ. २/२७/९

जो लोग जीव, प्रकृति और ईश्वर की तीन प्रकार की विद्या को धारण करके उसे अन्यों को देते हैं, सबको अज्ञान रूपी निद्रा से उठाकर विद्या में जागृत करते हैं, वे मनुष्यों के मंगलकारी होते हैं।

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर